प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-506
समावेशी-संदर्भ में बच्चों को समझना

ब्लॉक-1
बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास को समझना

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A/24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्सर-62 नौएडा,
गोतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वेबसाइट: www.nios.ac.in
**EXPERT COMMITTEE**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position and Details</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Dr. Sitansu S. Jena</td>
<td>Chairman, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Sh. B.K. Tripathi</td>
<td>IAS, Principal Secretary, HRD, Govt. of Jharkhand, Ranchi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. A.K. Sharma</td>
<td>Former Director, NCERT, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. S.V.S. Chaudhary</td>
<td>Former Vice Chairperson, NCTE, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. C. B. Sharma</td>
<td>School of Education, IGNOU, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. S.C. Agarkar</td>
<td>Professor, Homi Bhabha Centre for Science Education, Mumbai</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. C.S. Nagaraju</td>
<td>Former Principal, RIE (NCERT), Mysore</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. K. Doraismi</td>
<td>Former Head, Department of Teacher Education and Extension, NCERT, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. B. Phalachandra</td>
<td>Former Head, Dept of Education &amp; Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. K.K. Vashist</td>
<td>Former Head, DEE, NCERT, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. Vyasuda Kamat</td>
<td>Vice Chancellor, SNDT Women’s University, Mumbai</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Huma Masood</td>
<td>Education Specialist, UNESCO, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. Pawan Sudhir</td>
<td>Head, Dept. of Art &amp; Aesthetic Education, NCERT, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Sh. Binay Pattanayak</td>
<td>Education Specialist, UNICEF, Ranchi</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Kuldeep Agarwal</td>
<td>Director(Academic), NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Prof. S.C. Panda</td>
<td>Sr. Consultant(Academic), NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Kanchan Bala Kathroo</td>
<td>Executive Officer(Academic), NIOS, NOIDA</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**COURSE COORDINATOR**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position and Details</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Prof. B. Phalachandra</td>
<td>Former Head, Dept of Education &amp; Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**LESSON WRITERS**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Dr. Sharmista, Lecturer</td>
<td>BGS, B.EdCollege, Mysore</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. T. N. Raju, UC Principal</td>
<td>BES B.EdCollege, Bangalore</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Kavya Kishore, Lecturer</td>
<td>IASE, Bangalore</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Parimala, Guest Faculty</td>
<td>Dept of Women Studies, Mysore University</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Jayanthi Narayan</td>
<td>Consultant, Special Education, (LD &amp; ID), Former Dy. Director, National Institute for the Mentally Handicapped, Secunderabad</td>
</tr>
<tr>
<td>Ms. Lakshmi Prasad. C</td>
<td>Student Counsellor</td>
</tr>
<tr>
<td>Rajiv Gandhi Salai</td>
<td>Kalavakkam, Tamil Nadu</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. D. Rekha, Project coordinator, V-Lead, Mysore</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. S. Bhaskrana</td>
<td>Retd Principal, RV Teachers College, Bangalore</td>
</tr>
<tr>
<td>Mr. H. L. Satheesh</td>
<td>Teacher, DM School, RIE, Mysore</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**CONTENT EDITOR**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position and Details</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Prof. S.K. Panda</td>
<td>Professor STRIDE, IGNOU, New Delhi</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**TRANSLATORS**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Dr. Ravinder Pal</td>
<td>Retd. Sr. Lecturer, DIET, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Ms. Anuradha</td>
<td>Lecturer, DIET, New Delhi</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Satyavir Singh</td>
<td>Principal, S.N.I. College, Pilans, Baghpat (U.P.)</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Anil Kumar Teotia</td>
<td>Sr. Lecturer, SCERT, New Delhi</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**PROGRAMME COORDINATOR**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Prof. S.C. Panda</td>
<td>Sr. Consultant (Teacher Education), Acad. Dept, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Kanchan Bala Kathroo</td>
<td>Senior Executive Officer (Teacher Education), Acad. Deptt, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**COVER CONCEPTUALISATION & DESIGNING**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Mr. D.N. Upreti</td>
<td>Publication Officer, Printing, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Mr. Dhramanand Joshi</td>
<td>Executive Assistant, Printing, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**TYPESETTING**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>M/S Shivan Graphics</td>
<td>431. Rishi Nagar, Delhi-34</td>
</tr>
</tbody>
</table>

**SECRETARIAL ASSISTANCE**

<table>
<thead>
<tr>
<th>Name</th>
<th>Position</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>Ms. Sushma</td>
<td>Junior Assistant, Academic Department, NIOS, NOIDA</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. I.P. Gowramma</td>
<td>Asstt. Prof, RIE, Mysore</td>
</tr>
<tr>
<td>Ms. Vidya Pramod</td>
<td>Faculty, CBR, Net work Bangalore</td>
</tr>
<tr>
<td>Dr. Asha Kamath</td>
<td>Assistant Professor, Regional Institute of Education, Mysore</td>
</tr>
<tr>
<td>Ms. Kalapana Prakash</td>
<td>Programme Co-ordinator KPAMRC Bangalore</td>
</tr>
</tbody>
</table>
अध्यक्ष का संदेश....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने सैकड़े एवं व्यावहारिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्यापक बंटों का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से कंदक कुणवला-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपयोग उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का निर्माण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुख्यालय शिक्षण से युक्ति, सूचना एवं संचार तकनीक, अनुमान एवं निर्देश, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूर्ण होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रेशिष्ट शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकर्ताओं के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रेशिष्ट अतिकृति शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण विशेषता उपलब्ध प्रसारण करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाने के में ऑप्शन करते हुए मुख्य सूचनाधारी ही रही है। मे आपके साथ के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में सहयोग के लिए आपका आमर्त्य व्यक्त करता हूं। शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक आयाम के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आपका अपनेक व्यवहार विकासी शिक्षकों को पहले ही प्रदान कर चुका है। चूँकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है वह आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। में आश्चर्य हूँ कि आपको द्वारा अब तक संचार जान और अनुभव निर्देशन ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है एवं एक शिक्षक के रूप में आपको नियमित कार्य को बाधित हुए, बिना आपकी पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का निरूपण अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए किसी स्थायी अनुपस्थिति आपको सेवा के लिए योगदान के अतिरिक्त आपको समाज सुधार करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायता होनी चाहिए।

इस महान प्रयास में शुभकामनाओं सहित!

प्रज्ञा, पुत्र, नेहा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
<table>
<thead>
<tr>
<th>खण्ड</th>
<th>इकाई</th>
<th>इकाई का नाम</th>
<th>सैद्धांतिक अध्ययन अवधि (घंटों में)</th>
<th>प्रयोगात्मक अध्ययन</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>ब्यौरक-1</td>
<td>इकाई 1</td>
<td>बच्चों को समझना</td>
<td>6</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 2</td>
<td>आनुवंशिकता एवं वातावरण</td>
<td>6</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td>ब्यौरक-2</td>
<td>इकाई 3</td>
<td>व्यक्ति का विकास एवं आकार</td>
<td>8</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 4</td>
<td>स्तन्त्र कौशलों का विकास</td>
<td>8</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 5</td>
<td>आत्म प्रत्यक्ष का विकास</td>
<td>10</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 6</td>
<td>बच्चों में सूचनात्मकता का विकास</td>
<td>9</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td>ब्यौरक-3</td>
<td>इकाई 7</td>
<td>समावेशी शिक्षा का परिप्रेक्ष्य</td>
<td>6</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 8</td>
<td>विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) को अवधारण</td>
<td>7</td>
<td>4</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 9</td>
<td>विशेष जरूरती वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा</td>
<td>9</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>ब्यौरक-4</td>
<td>इकाई 10</td>
<td>अवधारण कौशलों का विकास महत्वप्रमाणी उपकरण, विशेष उपचार</td>
<td>9</td>
<td>3</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>इकाई 11</td>
<td>शिक्षा में लैंडमाक्ट पुदिके</td>
<td>9</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>इकाई</td>
<td>विषय</td>
<td>अनुमो.</td>
<td>सवाल</td>
<td>विवरण</td>
</tr>
<tr>
<td>--------</td>
<td>------------------------</td>
<td>--------</td>
<td>-------</td>
<td>------------------------------------------------------------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>बालिका सशस्त्रता</td>
<td>9</td>
<td>6</td>
<td>• अपने विद्यालय की बालिकाओं में जीवन कोशलों के विकास में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करना।</td>
</tr>
<tr>
<td>13</td>
<td>बाल अधिकार एव अधिकारी</td>
<td>9</td>
<td>6</td>
<td>• अपने विद्यालय एव आस-पास के क्षेत्र में बाल अधिकारों के हनन को सुनिश्चित करना।</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>शिक्षण</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>15</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>योग</td>
<td>120</td>
<td>60</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल योग</td>
<td></td>
<td>120+60+60=240</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
ब्लॉक-1
बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास को समझना

इकाई 1: बच्चे को समझना

इकाई 2: आनुवंशिकता एवं बातावरण
खंड प्रस्तावना

विषयों के रूप में आप, विषय कोड 506 : बच्चों को समावेशी संदर्भ में समझना, का अभ्यास करेंगे। यह विषय चार खण्डों में विभाजित है। यह विषय आपको बच्चों की प्रकृति एवं आवश्यकता को समझने हेतु सक्षम बनायेगा ताकि आप शिक्षण अभिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बना सकें। आप बालकों की व्यक्तिक विभिन्नताओं को समझ सकेंगे तथा बाल स्थली वातावरण बना सकेंगे। आप बच्चों के अधिकारों को जान सकेंगे तथा अधिकारों का संरक्षण कर सकेंगे। यह विषय आपको बच्चों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भों के द्वारा जागरूक बनाएगा।

खण्ड 1 बाल विकास एवं वृद्धि के आधार

आप विषयों के रूप में खण्ड 1 : बाल विकास एवं वृद्धि के आधार का अभ्यास करेंगे। यह खण्ड बच्चों को समझने, आनुवंशिकता तथा वातावरण से संबंधित दो इकाइयों में विभाजित है। प्रत्येक इकाइयों कई भागों तथा उपभागों में विभाजित है।

इकाई 1 : बच्चों को समझना

इस इकाई के अभ्यास के पश्चात आप वृद्धि एवं विकास का अर्थ समझ सकेंगे तथा वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे। साथ ही आप वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे। साथ ही आप वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को सूची बना सकेंगे। आप वृद्धि एवं विकास को विभिन्न अवस्थाओं की परंपरा कर सकेंगे तथा इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका भी जान सकेंगे।

इकाई 2 : आनुवंशिकता एवं वातावरण

यह इकाई आपको आनुवंशिकता तथा वातावरण का अर्थ जानने में सहायता करेगा। आप आनुवंशिकता की प्रक्रियाओं को जानकर उस पर चर्चा करने योग्य हो सकेंगे। आप वातावरण से संबंधित विभिन्न कारकों को सूची बना सकेंगे। इस इकाई में आप बच्चे को वृद्धि एवं विकास के संदर्भ में आनुवंशिकता तथा वातावरण के सापेक्षिक महत्त्व को समझ सकेंगे तथा इनके शैक्षिक उपयोग पर चर्चा कर सकेंगे।
विषय सूची

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम. सं.</th>
<th>पाठ का नाम</th>
<th>पृष्ठ संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>इकाई 1 : बच्चों को समझना</td>
<td>1</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>इकाई 2 : आनुवांशिकता एवं चालावरण</td>
<td>26</td>
</tr>
</tbody>
</table>
इकाई 1 बच्चों को समझना

संचरणा

1.0 प्रस्तावना
1.1 अधिगम उद्देश्य
1.2 वृद्धि एवं विकास में अंतर
1.3 वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत
1.4 वृद्धि एवं विकास के बीच संबंध
1.5 वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक
1.6 वृद्धि एवं विकास के स्तर
1.6.1 वृद्धि के स्तर-वैज्ञानिक संविधान से बच्चन तक और उनके तत्त्व
1.6.2 शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के लिए विकास के स्तरों के तत्त्व
1.7 बच्चों की वृद्धि एवं विकास में शिक्षकों की भूमिका
1.8 संगठन
1.9 प्रति जीव और उत्तर
1.10 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
1.11 अन्तः इकाई अभ्यास

1.0 प्रस्तावना

एक शिक्षक के लिए यह केवल बच्चों की वृद्धि एवं विकास के ज्ञान के साथ ही संबंध है कि वह एक बच्चे को उचित निदान एवं निर्देश दे ताकि वह एक अच्छा नागरिक हो सके जो अपने जीवन निदान एवं निर्देश तथा वह एक अच्छा नागरिक हो सके जो अपने उत्तराधिकारों और अधिकारों को समझता है। यह कहा जा सकता है कि जैसे ही वह ज्ञान लेता है उसका पर्यावरण उसे शुरू से ही प्रभावित करता शुरू कर देता है। पर्यावरण का प्रभाव बच्चे की परिपक्व योग्यताओं को कदाचितः है। शिक्षकों में मानवीय वृद्धि की प्रकृति और मानवीय वृद्धि के सिद्धांत तथा इस समस्या के सूचक चरण को अनुकूल करने की सम्पूर्ण पक्ष होनी चाहिए। बच्चे के जीवन और वृद्धि के प्रारंभिक कुछ वर्ष बच्चों में बाद के विकास की अपक्ष के लिए अधिक साधन है। जैसा कि हम इकाई में देखेंगे कि वृद्धि संकल्पना से गृहूत तक एक सत्ता

लाइन 1 : बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास की समझना
प्रकिया है। अतः शिक्षक को अवश्य समझना चाहिए कि एक बच्चे की वृद्धि के नियम बिंदुओं पर और किस प्रकार की औपचारिक और आंप्रासारिक परीक्षायां और तकनीकों बच्चे को पूर्ण वृद्धि प्राप्त करने में सहायता करें। एक शिक्षक विभिन्न सामाजिक-आधिकारिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों का समाना करता है और जिनके पास विभिन्न आयु स्तरों के और उन सब्जियों वैज्ञानिक अंतर्गत का एक विस्तृत प्रकार है। यह इकाई वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों और लक्षणों जो विविध विकासात्मक आयामों में विभिन्न आयु स्तरों पर बच्चों के सामाजिक-पृष्ठभूमि विकास के लिए प्रभावी ही है निर्देशित प्रदान करते हैं कि एक मौलिक समझ प्रदान करता है। एक बच्चा पढ़ाई से साथ पारस्परिक क्रिया के कारण सिद्ध होने से व्यवहार को परिवर्तित करता है, जिसे आपसी शिक्षक दृष्टि समझ जाता है।

1.1 अधिग्रहण उद्देश्य

इस इकाई का पढ़ने के बाद आप सक्षम होगे:

- वृद्धि और विकास में अंतर करने में।
- वृद्धि और विकास के सिद्धांत का वर्णन करने और सूची बनाने में।
- वृद्धि और विकास को संबंधित करने में।
- वृद्धि और विकास के लिए उत्तरदायी तत्त्वों की पूरी बनाने में।
- बच्चों में उनकी वृद्धि एवं विकास के विभिन्न स्तरों पर शारीरिक, नानाविध, नानावात्रक, सामाजिक और नैतिक लक्षणों को पहचानने में।
- बच्चों की वृद्धि एवं विकास में शिक्षक की भूमिका का वर्णन करने में।

1.2 वृद्धि एवं विकास में अंतर

विकास तब आता है जब परिवर्तन और अनुभव के कारण मानव जाति में क्रांतिक एवं अभिविशेष परिवर्तन आते हैं। जबकि वृद्धि सर्वप्रथम एवं शाश्वत परिवर्तन को दर्शाता है। विकास वृद्धि के साथ-साथ व्यवहार में उन परिवर्तनों से सम्बद्ध है जो पर्यावरणीय स्थिति के परिणाम स्वरूप होते हैं। विकास इस प्रकार एक अधिक सामाजिक शैल है जिसका एक दूसरा तत्त्व है जो परिवर्तन कहलाता है। वृद्धि एवं निरंतर परिवर्तन है जो भार: तक्रार, आकार में बढ़तो है। फिर भी वृद्धि और विकास परिवर्तनों को दर्शाने के लिए एक दूसरे के स्थान पर प्रभावित होते हैं। ये दोनों तरह स्पष्टता अपस्मार प्रकृति हैं की कैसे वर्णित हैं:

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम सं.</th>
<th>वृद्धि</th>
<th>विकास</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>आकार में बढ़ती (उंचाई, भार और लम्बाई) जिसमें मानविक परिवर्तन होता है वृद्धि कहलाते हैं।</td>
<td>रूप और आकार में परिवर्तन जो कार्य या चरित्र में गुणात्मक परिवर्तन लाते हैं, विकास कहलाते हैं।</td>
</tr>
</tbody>
</table>
प्रश्नात्मक प्रश्न-1

• क्यों वृद्धि, विकास से भिन्न है? यदि हां तो कैसे? लगभग 50 शब्दों में लिखें।

1.3 वृद्धि एवं विकास में अंतर

वृद्धि निर्दिष्ट परिवर्तन को शामिल करते हुए एक सार्थक गतिशील प्रक्रिया है। वर्तमान अनुभव जिसे बच्चे पर्यावरण के अनुभवों की प्रकृति और दिशा से जुड़ा हुआ करता है। सामान्य बच्चा एक बढ़ता हुआ अवस्था है जैसा कि वह उठाए हुए प्राण करता है और भार बढ़ाना है, यह अपनी गतियों, जान, भावाधारक निगरानी, सामाजिक सामसंज्ञा, प्राणायामों और अन्य मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक विकास के पहलूओं को अर्जित करता है। हमने नीचे वृद्धि एवं विकास के 9 सिद्धांतों को दिया है जिसे विश्लेषित कर और देख सकते हैं यदि आप के अस्पस के बच्चों पर ये लागू होते हैं।

1. विकास एक प्रतिभा का अनुकरण करता है:

जन्म पूर्व और जन्म के पश्चात् मानव सत्ता का विकास एक प्रतिभा या एक सामाजिक क्रम
2. विकास की दिशा का सिद्धांत: विकास की दिशा ‘शीर्षपाद–पृष्ठठील’ के साथ–साथ Proximodistal दिशा में है। विकास की दिशा सिर से पूंछ की ओर है उदारस्वर्णप–चक्रबाहु में अरब ‘शीर्षपाद–पृष्ठठील’ कहलाता है और कंद्र से परिधि की ओर Proximodistal कहलाता है। बच्चा पहले अपने सिर पर नियंत्रण प्राप्त करता है और फिर पूंछी और पैरों पर नियंत्रण प्राप्त करता है। उसी प्रकार बच्चा पहले बड़े मांसपेशियों पर नियंत्रण करता सीखता है और फिर छोटे मांसपेशियों से श्रेष्ठ गतिविधियाँ करता है। इसका तालम्यल यह है कि बच्चा पहले भुजाओं पर नियंत्रण करने की योग्यता विकसित करता है और फिर वह अंगुलियों और अन्य अंगों पर नियंत्रण कर सकता है।

3. सतत विकास: विकास के प्रक्रिया संकल्पना से सुनहरो होगा जन्म से मानने तक लगातार चलने है जैसे–गर्भाभाष्य से समाधि तक।

4. वृद्धि और विकास का वर एक समान नहीं है: यदापि विकास सतत होता है फिर भी वृद्धि और विकास का वर एक समान नहीं है। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में त्वरित परिवर्तन आते हैं किन्तु बाद के वर्षों में यह कम हो जाता है।

5. वैकल्पिक भिन्नता का सिद्धांत: विकास के संदर्भ में विविध आयामों में विकास का वर और गुणवत्ता व्यक्ति से व्यक्ति में भिन्न होता है। लड़कों और लड़कियों के बीच वृद्धि तर पर अंतर होता है। लड़कों की सुनहरा में लड़कियों पहले परिपक्व होती है। लड़कियों को अर्थात् लड़कियों समानान्त: अधिक मोटी होती है। लड़कियों का सीरे–गठन उनकी उम्र के अनुसार अधिक बड़ा दिखाई देता हैं और आसानी से पेटल कार्य को करने का उत्तराधिकार लेता है।

6. विकास का प्रशासन समान्य से विशिष्ट प्रतिक्रिया की ओर होता है: प्राय: विकास के सभी आयामों में प्रतिक्रियाओं पहले समान होती हैं और बाद में विशिष्ट हो जाती हैं। भाषा विकास के कंस में बच्चा पहले भिन्न शब्दों, असरों और तुलनाओं की ध्यानियों को बोलता है, उसी प्रकार छोटी वस्तुओं को देखने से पहले वह बड़ी वस्तुओं को देखता है।

इसका तालम्यल है कि बच्चे के विकास के सभी अवस्थाओं में समान्य बोधप्राप्त से विशिष्ट की ओर आगे बढ़ती है।

7. अवस्थाकरण का सिद्धांत: समान्य प्रतिक्रियाओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर आगे बढ़ते हुए, पुन: विशिष्ट प्रतिक्रियाओं संपूर्णता में एकीकृत हो जाती है। इसका तालम्यल है कि गांट संचालन संपूर्ण से एक अंग को ओर और पुन: एक अंग से संपूर्णता में स्थान लेता है।

8. अंत संबंध का सिद्धांत: अत: संबंधों के कारण बच्चे के विविध पहलुओं में विकास एक दूसरे पर आश्रित है। समाजशास्त्र पहलु में एक व्यक्ति का विकास भावात्मक्य विकास को प्रभावित करता है और प्रभाव में विकास के सभी पहलुए एक दूसरे के साथ संबंध है या एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
9. **भविष्यवाणी** : प्रत्येक बच्चे की वृद्धि और विकास का दर भविष्य के या तो शारीरिक या जीविक्षा विकास का अनुमान करने का क्षेत्र रहता है।

**प्रश्नमाला-2**

• सिद्धांतों को लिखें जो वृद्धि और विकास का अनुकरण करते हैं।

1.4 वृद्धि और विकास के बीच संबंध

‘वृद्धि’ और ‘विकास’ इन दो शब्दों के जीव संबंध पर विचार करने में अत्यंत राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है। वैज्ञानिक साहित्य में ये दो शब्द बार-बार से प्रयुक्त होते हैं। वृद्धि कौशलीय गुण जैसे-धारा, भाषा, वृद्धि आदि में वृद्धि। दूसरी तरफ़, विकास सभी अंगों का संबंध है जिसे वृद्धि और विशिष्टता उत्पन्न करते हैं। हालांकि अनेक शब्दों में परिवर्तन का वर्णन करने में वृद्धि की निर्देशित क्रिया जा सकता है जो शरीर और व्यवहार के विशिष्ट फलदायिकाओं में स्थान लेता है। यद्यपि विकास शब्द बच्चे की समृद्धि के संबंध में प्रयुक्त किया जा सकता है। वृद्धि शब्द की परीक्षण के संबंध में कुछ विचार किये जा सकते हैं। वृद्धि परिवर्तन के साथ-साथ अवधित की जा सकते हैं। समय के परिवर्तन पर भाषण शामिल और व्यवहार सम्बंधित प्रणालियों में परिवर्तन परिवर्तन के निर्देश किया जा सकता है। वृद्धि परिवर्तन के साथ-साथ अधिग्रहण किया जा सकता है। समय के परिवर्तन पर भाषण शामिल और व्यवहार सम्बंधित प्रणालियों में परिवर्तन परिवर्तन के निर्देश किया जा सकता है। व्यवहारिक रूप से संरचना विकास परिवर्तन का एक क्रमिक प्रतिस्पर्धा है जो परिवर्तन में तब के साथ-साथ परिवर्तन पर निर्भर वृद्धि प्रक्रियाओं को बहुसंख्या का शाब्दिक क्रिया करता है। सभी वृद्धि प्रक्रियाएं श्रेणियों द्वारा निर्देशित हैं जिनमें वृद्धि परिवर्तन के प्रति क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप से है। इसलिए वृद्धि प्रक्रियाओं जैसे चलन सीखना या बोलना सीखना अपेक्षाकृत कम समय लेती हैं। किन्तु अन्य प्रक्रियाओं अधिक समय लेती हैं। यह समय क्षणिक विचार करने में हम वृद्धि और विकास कहते हैं जिनके तथ्य तत्त्व लेते हैं। यह समय की आवश्यकता है जब हम एक व्यक्ति के व्यवहार के साथ-साथ व्यक्ति को तुलना करते हैं तो हम देखने में सक्षम हैं कि वृद्धि चरित्र छोटी हो चुकी है।
प्रगति जाँच-3

- आप वृद्धि और विकास को कैसे संबंधित करते हैं? 50 शब्दों में लिखें।


1.5 वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक

सहलपत्त से पहले, एक मात्र के गर्भाशय में जीवन की शुरुआत, मानव सत्ता की वृद्धि और विकास आत्मिक एवं बाह्य रूप में विस्तृत रूप से वर्गीकृत विभिन्न कारकों द्वारा प्रभावित होता है। हम नीचे इन कारकों पर विचार करते हैं:-

आत्मिक कारक:

ने सभी तथ्य जो व्यक्ति के अंदर रिह्य हैं आत्मिक कारक कहलाते हैं।

इन तथ्यों में सम्मिलित हैं:

(1) आत्मविश्वसन कारक
(2) जैविक या संवैधानिक कारक
(3) वृद्धि
(4) भावात्मक कारक
(5) सामाजिक प्रकृति

आइए हम बच्चों की वृद्धि और विकास के इन आत्मिक कारकों के प्रभाव पर विचार-विमर्श करें।

(1) आत्मविश्वसन कारक—आत्मविश्वसन कारक अपनी मूलिका मात्र के गर्भाशय में संकल्पन के समय निभाई है। सन्तान में उसके तत्कालिक अभिभावक से जीन और गुणसूत्रों के रूप में जो अंतरित होता है और इस समय आत्मविश्वसन योगदान को संस्थापित करता है। यह योगदान वातावरण प्रारंभिक बिंदु और सभी वृद्धि एवं विकास के लिए आधार है जो कि बच्चे के जीवन में बाद में स्थान लेता है। ऊँचाई, पार, आंखों और लच्छा का रंग, बाल के लक्षण, सभी इन आत्मविश्वसन प्रभावों द्वारा निर्धारित होते हैं। शारीरिक संरचना,
द्वारकिक प्रणाली और किसी की संबंधित बात तक सब अन्य कसूर, शरीर रसायन और शारीरिक विकास का एक विशाल विचार है जो आन्तरिक तथ्यों से निर्धारित होती है।

(2) सौभाग्य और संबंधित कारक : एक बच्चे का नैस्थिक बनावट, कार्यक मंचन, शरीर रचना और शरीर रसायन उनकी वृद्धि और विकास का उनके संपूर्ण जीवन में प्रभावित करता है। इसे निम्नलिखित तरीके से प्रभावित किया जा सकता है:—

(i) एक बच्चा जो शारीरिक रूप से प्रभावित है या जिसमें आत्मिक विकास है उसके साथ शारीरिक वृद्धि के लिए कारक के रूप में संतोषजनक परिणाम प्राप्त करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। यह प्रकार: बीमारी से प्रभावित है जो न केवल उसकी शारीरिक वृद्धि को बाधित करता है विभिन्न अन्य श्रेणियों (मानसिक, सामाजिक और ध्वनि) उनके विकास को भी प्रभावित करता है।

(ii) द्वारकिक प्रणाली जो शरीर की गति संचालन को नियंत्रित करता है, संजानात्मक क्षेत्र में बच्चे की वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करता है।

(iii) अंतःप्राणी या वाहिनीरूप अवशेष में एक व्यक्ति की वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। शरीर का स्वास्थ्य इन ग्रंथियों द्वारा सभापतित होता है। इन ग्रंथियों में से प्रत्येक को प्रभावित करता है जिन्हें हमारे कोहा जाता है। ये हमारे खून में जाकर मायत शरीर में संगठित होते हैं। ये उन सभी उद्देश्यों को प्रभावित करते हैं कि जो शरीर प्रणाली, ध्वनि किर्णियों और विकास निर्धारित करते हैं अतः वाहिनीरूप अवशेष के कार्यकालीन विकास के प्रभाव पहलुओं (शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, ध्वनि) और नैतिक) पर एक वृद्धि प्रभाव डालती है। संजानात्मक वृद्धि एवं विकास के लिए इन ग्रंथियों का सामाजक कार्य अनिवार्य है। इन ग्रंथियों के अविभाजित विकास एवं तत्त्व किर्णियों के केंद्र में इनके परिणामस्वरूप वृद्धि एवं विकास में एक ध्वनि असंगता उभरना हो जाता है।

(iv) वृद्धि : वृद्धि (सौजन्य की ओपनिटा, सही समय पर सही निर्णय लेने और समायोजित करने के रूप में) का एक बच्चे की संपूर्ण वृद्धि एवं विकास में एक सार्थक भूमिका है। यह उसके सामाजिक व्यवहार, नैतिक निर्णय और ध्वनि वृद्धि को प्रभावित करता है। एक वृद्धि मनोवातक ने अपनी भावनाओं पर तत्त्विक नियंत्रण करने का काम है और इन्हें उसके वैश्विक और सामाजिक संबंध से साथ जारी रहने में सक्षम पाया है। इसका प्रमाण एक बच्चे का शारीरिक, सामाजिक, ध्वनि और भाषा विकास उसकी वृद्धि के स्तर से बहुत प्रभावित और निर्धारित होता है।

(v) ध्वनि कारक : एक व्यक्ति की संपूर्ण वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने में ध्वनिक कारक जैसे-ध्वनिक सामाजिकता और विकास एक वृद्धि विशेषता निर्माण है। एक बच्चे जो नकारात्मक भावनाओं जैसे डर, और खैरियों आदि को दबा हुआ है उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और भाषा विकास प्रभावित रूप से प्रभावित होता है। यदि एक व्यक्ति अपनी भावनाओं पर तत्त्विक नियंत्रण नहीं कर सकता तो वह अपनी वृद्धि एवं विकास में निर्देशित हो कट पता है।

नोट 1 : बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास की समझाना
(vi) सामाजिक प्रकृति: एक व्यक्ति का सामाजिक प्रकृति उसकी वृद्धि एवं विकास के अन्य पहलूओं में सामंजस्य और उन्नति प्राप्त करने में उसकी सहायता करता है। वह अपने बाहरी जगत से, अपनी सामाजिक प्रकृति के माध्यम से अधिक सीखता है जो उसकी उचित वृद्धि एवं विकास के लिए एक वरदान सिद्ध हो सकता है।

बाह्य कारक: एक व्यक्ति के बाहर उसके बाहर वातावरण में स्थित कारक उसकी वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले बाह्य कारक कहलाते हैं। एक बच्चा जब सन्तान शुरू कर देता है उसके तकनीक बाद ये कारण वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने की अपनी भूमिका शुरू कर देते हैं। ये निम्नलिखित को शामिल कर सकती हैं:-

1. मां के गर्भाशय में वातावरण: जो पोषण एक बच्चे को उसकी मां के गर्भाशय में संकल्पना से लेकर जन्म तक उपलब्ध होता है वह उसकी वृद्धि एवं विकास के वर्तनीको से बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस अवधि से संबंधित कुछ कारक नीचे उद्देश्य हो सकते हैं:
   (a) गर्भाशय का रोग मां का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य।
   (b) गर्भाशय में एक या अधिक बच्चे पोषित हों।
   (c) गर्भाशय में धून द्वारा प्रात: पोषण की गुणवत्ता और मात्र।
   (d) बालग्रंथ विकल्पण या विकल्पण द्वारा धून प्रभावित हुआ है या नहीं।
   (e) सामान्य या असामान्य प्रसव।
   (f) गर्भाशय में बच्चे कोई नुकसान या दुर्घटना।

2. जन्म के बाद उपलब्ध वातावरण: अपने जन्म के बाद वातावरण की विभिन्न स्थितियों और स्थितियों से बच्चा जो कुछ भी प्राप्त करता है वो उसकी वृद्धि एवं विकास को भिन्न तरीकों से प्रभावित करते हैं। इन्हें निम्न रूप से वर्णित किया जा सकता है:-
   (a) जीवन में दुर्घटनाओं एवं घटनाओं: एक व्यक्ति की वृद्धि एवं विकास उसके जीवन में घटित अपील एवं दुर्घटनाओं एवं घटनाओं से बहुत प्रभावित होती है। कभी-कभी एक छोटी सी घटना या एक घटना उसके जीवन के समृद्ध विकास को परिवर्तित कर सकता है। उद्घाटनके लिए यदि एक बच्चे की स्थायी उपाधि एक दुर्घटना में क्षति प्राप्त हो जाती है तो यह उसके मानसिक विकास को भागित करेगा।

(b) धौलिक वातावरण, विचित्रितिय देखभाल और पोषण की गुणवत्ता: एक बच्चे की वृद्धि एवं विकास उसके जीवन और कार्य के लिए उपलब्ध उसके धौलिक वातावरण, विचित्रितिय
बच्चों को समझना

देखभाल और पोषण से बुद्धि रूप से प्रभावित होता है। इनमें खुश ध्यान, संतुलित आहार, अच्छी जीवनसाधन, अच्छी कार्य स्थितियां और उचित चिकित्सा देखभाल सम्मिलित है। इन वक्तों में उनका उत्पादन पर आधारित बुद्धि एवं विकास के शिक्षार्थी को वह प्राप्त करेगा।

(c) सुविधाओं की गुणवत्ता और सामाजिक तथा सांस्कृतिक शक्तियाँ द्वारा प्रदत्त अवसर: एक बच्चे इस सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से सही सही की बुद्धि एवं विकास के लिए जो प्राप्त करता है वह उसकी समझ के सम्पूर्ण विकास को प्रभावित करता है। इन सामाजिक और सांस्कृतिक शक्तियों द्वारा इच्छित विकास और वाद को वह विकसित करता है। कुछ ऐसी स्थितियाँ नीचे दी गयी हैं:

1. एक बच्चे द्वारा प्राप्त पैदूक एवं परिवारिक देखभाल।
2. अभिभावकों और परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति।
3. पढ़ाई और आसार से प्रभावित गुणवत्ता।
4. बच्चे द्वारा प्राप्त विद्यालयी गुणवत्ता।
5. एक बच्चे के सहायता को संबंध की गुणवत्ता।
6. एक बच्चे, उसकी परिवार की उसकी जाति, धर्म, राज्यवत्ता या नागरिकता से संबंध
7. उपलब्ध व्यवहार की गुणवत्ता।
8. सरकार, कानून और समुदाय के संगठन की गुणवत्ता जिससे एक बच्चा संबंध है।
9. देश की शासन और स्थिति की गुणवत्ता जिससे एक बच्चा संबंध है।

प्रश्न जाँच-4

1. बच्चों में बुद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले दो मुख्य कारकों का लगभग 75
2. रोशनी से सविस्तार प्रतिवर्तन करें।

1.6 बुद्धि एवं विकास के स्तर

बुद्धि एवं विकास के स्तर दो उपवर्गों में चर्चा किये गए हैं जिनमें एक है शैली एवं उनके
3. तत्त्व, और दूसरा है शिक्षण एवं अधिग्रहण के लिए उनके तत्त्व।

क्लास 1 : बच्चों की बुद्धि विकास एवं विकास की समझना
1.6.1 बृद्धि के स्तर-शैक्षावस्था से बचपन तक और उनके तत्त्व

विकास के मुख्य स्तर निम्न हैं:

(i) जन्म से 2 वर्षों तक: शैशवावस्था
(ii) 2 वर्ष से 6 वर्षों तक: प्रारंभिक बचपन
(iii) 6 वर्ष से 12 वर्षों तक: बाल का बचपन
(iv) 12 वर्ष से 19 वर्षों तक: किशोरवास्था

पत्रों का विचार में विचार विमान करें

(i) जन्म से 2 वर्षों तक: शैशवावस्था
(ii) प्रारंभिक बचपन (2 वर्ष से 6 वर्षों तक)

1. शारीरिक विकास: 2 से 6 वर्षों की आयु की 
अवधि के दौरान शारीरिक आयाम में बृद्धि उतनी 
लघूता नहीं होती जितनी कि शैक्षावस्था में अनुभूत की जाती है। बच्चा एक लघुत 
के शारीरिक समानुपातों का आवलोकन करता शुरू कर 
देता है। पैरों की बृद्धि लघूता होती है और पैर किसी 
की सम्पूर्ण ऊंचाई के लगभग अन्यायों की प्रस्तुत 
करता है। फिर की बृद्धि भी होती है और धड़ की बृद्धि 
लघूता होता है। सामान्यतः: एक पुरुष बच्चे का भार 
लगभग 33 पौंड और लम्बाई 38 इंच होती है।

2. मानसिक विकास: बच्चा विविध प्रकार के गति की दृष्टि में 
विकास करता है। बाल में ही उत्पादन की जाती है। ध्वनि 
भोजन करना, स्वयं बचपन, 
नाहरा, भाषा, अंगीकार, खिंचों से खेलना, भेंटिया का उत्कर्ष, उच्चता, कूदना आदि 5 से 
6 वर्षों को उपर में विकसित होते हैं। बाहुल्यता विकास सामूहिक गति संचालन से शुरू 
होकर विभेदीकरण और एकीकरण तक होता है। 2 वर्ष से 5 वर्षों का आयु के बच्चों के 
लिए मानवता की सार्थकता की निम्न हैं:
### विकास मानवण्ड

<table>
<thead>
<tr>
<th>गति</th>
<th>2 वर्ष</th>
<th>3 वर्ष</th>
<th>4 और 5 वर्ष</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>विकास</td>
<td>बिना सहायता के दहलता, उछलता, बौद्धता है।</td>
<td>उछलता कूदता है</td>
<td>मुक्ता और सक्रिय गति संचालन संगीत के प्रति प्रतिक्रिया करता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>सूक्ष्म गति</td>
<td>नकल करता</td>
<td>आकारों को मिला नकलता है। समानताओं और असमानताओं को रेखा ता है। रेखा को नाम दे सकता है।</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>सम्बन्ध</td>
<td>स्वर्ण को फहराता है, रंगों को फ़हराता है।</td>
<td>पादों को ठीक कर सकता है।</td>
<td>आकारों और रंगों को मिला सकता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>बोधात्मक</td>
<td>स्वर्ण को पहचानता है, रंगों को मिला नकलता है।</td>
<td>पादों को ठीक कर सकता है।</td>
<td>आकारों और रंगों को मिला सकता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>व्यवसायीकरण</td>
<td>200 राशियों, कुछ राशियों का प्रयोग करता है।</td>
<td>900 राशियों, आदर्शों का निर्माण करता है।</td>
<td>4 अंकों को डूबा सकता है। 2000 से 3000 राशि। श्रेणी निर्माण निर्माण कर सकता है।</td>
</tr>
<tr>
<td>अनुसूची व्यवस्था</td>
<td>आय पर निर्माण</td>
<td>खाना प्रदान है, एक आदमी की आँकूटि खींच सकता है।</td>
<td>4 अंकों, विनिर्देश से सही को खींच तकता है।</td>
</tr>
</tbody>
</table>

3. **भाषा विकास** : भाषा का विकास शिशु के जन्म पर रोग के साथ शुरू होता है। 10 महीने का बच्चा एक शब्द का प्रयोग करने में सक्षम है किन्तु 1 वर्ष के अंत तक उसकी गाइडलाइन बाल के 3 से 4 शब्दों तक वृद्धि होती है। भाषा का अवधारणावाद और प्रारंभिक विकास का प्रशिक्षण राज्यवादी के विकास में सहायता करता है। निम्न सारणी राज्यवादी के विकास को दिखाती है:

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्षों में आयु</th>
<th>श्रेणीवाली</th>
<th>वर्षों में आयु</th>
<th>श्रेणीवाली</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1 वर्ष</td>
<td>3</td>
<td>4 वर्ष</td>
<td>1560</td>
</tr>
<tr>
<td>2 वर्ष</td>
<td>30</td>
<td>6 वर्ष</td>
<td>2562</td>
</tr>
<tr>
<td>3 वर्ष</td>
<td>896</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
</tr>
</tbody>
</table>

4. **बौद्धिक विकास** : बच्चे का बौद्धिक विकास 2 वर्ष की आयु के पर्यंत चलता है। क्योंकि अब वह अपना सामाजिक बातचीत का अनुवाद करना शुरू कर देता है और नये अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। बौद्धिक विकास के निर्माण मुख्य लक्षण है:

(a) बच्चा परीक्षण के साथ सामाजिक बातचीत को संभालना रहस्य कर देता है।

(b) 6 वर्ष की उम्र तक बच्चे आकार, आकृति, रंग, समय और दूरी आदि का बोध विकसित कर लेता है।
5. सामाजिक विकास : बच्चा एक सामाजिक बातावरण में जन्म लेता है जहां समाज के मानदंड के अनुसार उसका व्यक्तित्व विकास एक आकार लेता है।
   (a) बच्चों में अपने और अपने बातावरण के प्रति विश्वास और अविश्वास की भावना विकसित होती है।
   (b) बच्चों में स्वयंभूत को बच्चा विकसित होता है। वे स्वतंत्रता पूर्वक अपने बातावरण का अनुबंध शून्य कर देते हैं।
   (c) सामाजिक बातावरण पर के बाहर तक फैल जाता है।
   (d) दोनों लिंगों के बच्चे बिना किसी पूर्वाधिकार के एक साथ खेलते हैं। वे सहमति से समूह खेलों में भाग लेते हैं जहां शारीरिक ऊर्जा प्रयुक्त होती है जैसे-लुका-छिपो का खेल।
   (e) वे दूसरों के साथ सहयोग करना सीखते हैं और साज़ा रूचियों और समाज व्यक्तित्व की विख्यातियों को आधार पर पिता बनाते हैं।
   (f) बच्चे परिवारों की कहानियों और जानवरों की कहानियों में रूचि रोकते हैं।
   (g) 3 से 6 वर्ष के बीच नकारात्मक पतन बढ़ती है। यह सामाजिक स्थितियों का एक उल्लास है। यह लगता है कि बच्चा जितना अधिक व्यक्ति हस्तक्षेपों से कूदने होता है उतना ही अधिक उसका व्यवहार नकारात्मक होगा।
   (h) खेल को स्थितियों में लड़कियों, लड़कों की अपेक्षा अधिक प्रभावी होते हैं।
   (i) बच्चा अपनी गतिविधियों की सामाजिक मान्यता चाहता है।

6. भावात्मक विकास : भावनावे जीवन में एक महत्वपूर्ण मूल्यवादी निर्माण हैं। और व्यक्ति के वैश्विक के और सामाजिक सामस्यों में योगदान देती हैं। वे पौष्टिक अभिव्यक्ति के जीवन में भावनाओं निर्माण तथा दार्शनिक है।
   (a) जीवन में विशेष विषयों का समन्वय करने में भावनाओं में उन्नति होती है।
   (b) वे हमारे व्यवहार के लिए एक उदार रूप में कार्य करते हैं।
   (c) भावनायें जीवन में दैनिक अनुभवों में आनन्द जोड़ती हैं।
बच्चों को समझना

(d) ये समाज में सामाजिक को प्रभावित करती है।

(e) उच्च भावनात्मक स्थितियों मानसिक सभ्य को बाधित करती है। चिंतन और तकनी विकसित हो जाती है।

(f) भावनायें व्यक्तियों के बीच संचार का एक मध्यम प्रदान करती है और सामाजिक मानकों को पुनर्अर्जित करने के लिए में व्यक्ति को उन्नत करने में विशेष निर्देश देती है।

(g) भावनात्मक हानि व्यक्तिकों को अव्यवस्थित करने में नेतृत्व करती है।

निम्नलिखित भावनात्मक लक्षण बच्चों में विकसित होते हैं

(a) भावनायें निरंतर रहती हैं।

(b) ये मूर्त बालकों के संबंध में अभिव्यक्ति होती है।

(c) ये अस्थायी है। उसका अर्थ है कि बच्चे अपनी भावनायें बहुत तीव्रता से बदलते हैं।

उदाहरण के रूप में-एक 3 वर्ष का बच्चा जो शराब खाता है को यदि कोई टॉफ्री दिया जाये तो खुश हो जायेगा।

(d) प्रेरणा की तीव्रता का ध्यान रखकर प्राथमिक बच्चन में भावनात्मक अविचारों तीव्र होती है।

(e) बच्चे अपनी भावनायें को छोड़ने में असफल रहते हैं किन्तु विभिन्न गतिविधियों जैसे-जिस्तन, गायन, चित्रण, ओगुण्डर उत्साहों और मूढ़ों को परीक्षणों के माध्यम से अपने अविचार रूप में उलझे अविचार करते हैं।

(f) भावनायें शक्तियों में परिवर्तित हो जाती है। भावनायें जो एक निरिक्षित आयु में बहुत मजबूत थीं, बच्चों को वृद्धि के समय कमजोर हो जाती है और जबकि अन्य भावनायें जो कमजोर थीं, मजबूत हो जाती है। ये परिवर्तन बच्चे के बौद्धिक विकास और विचारों के तथा मूढ़ों में परिवर्तनों की चाल शक्ति में बदलाव की कारण हो सकते हैं।

(iii) बाद का चयन (6 वर्ष से 12 वर्षों तक):

बाद का चयन जीवन का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। यह यह समय है जब बच्चा प्रायः बहुत विस्मयकारी तरीके से व्यवहार करना शुरू कर देता है। इसके विपरीत अभिभावक और शिक्षक बच्चों से मुद्दे रहते हैं। यह यह समय है जब समाज में बच्चे के व्यक्तिगत सामाजिक के लिए अभिभावक एवं शिक्षकों में उनका उद्देश्य निर्देशक एवं समझौता अपेक्षित होता है। 8 से 12 वर्षों तक मानव जीवन का एक अनुभव समय संपन्न होता है मानक अपना व्यक्ति आकाश और उद्देश्य प्लान करने के निकट होता है, स्वाभाविक लक्षण अभाव होता है, गतिविधि पहले की अपका मूल विचार और विचार होती है, और विशेष विकासी विकास, जीवन शक्ति और धर्मध्ये से लड़ने की शक्ति होती है। बच्चे पर के बाहर एक अपना जीवन विकसित करता है और इसकी प्राकृतिक रूपों व्यक्ति प्रभाव से कमी भी रक्षत नहीं होती है।
(1) शारीरिक विकास: बाद के बचपन के दौरान भार और ऊंचाई में धीमी बढ़ता होता है।

(2) वैद्यकिक विकास: 6 वर्ष से 12 वर्ष की आयु के दौरान वैद्यकिक विकास में निम्नलिखित परिवर्तन आते हैं:

(a) बच्चे अपने बाहर और बाहर के संसार के बीच स्वयं स्थापना करना शुरू कर देते हैं।

(b) 12 वर्ष की आयु तक प्राकृतिक तालुकों की संकल्पना लागू रही पूर्ण विकसित हो जाती है।

(c) यह सूचनाओं को प्रहर करने के लिए सुगुन्ध रहने और विचारों को संचालित करने के लिए पर्याप्त रहने के समय है। अधिक और धारापण अधिक सक्षम होते हैं क्योंकि बच्चा अपनी विविधता शिक्षा में प्रवेश करता है।

(d) तालिका विकास की अवधि बढ़ जाती है और बच्चा अधिक संस्कृतियों के संबंध में चुनाव करने, विकास करने और संज्ञानात्मक संक्रमणों को लागू करने में पूर्ण सक्षम हो जाता है।

(e) इस तरह पर वैज्ञानिक कहानियों और वैज्ञानिक संक्रमणों में भूमिका रूपी निर्माण पर पहुंच जाती है।

(f) साहस और चुनावार्थी बढ़ जाती है। चीजों को करने में बच्चे साहसिक दिखाते हैं।

(g) अन्य खेलों के उपर नागरिकों के खेलों को वरीयता दी जाती है।

(h) तथ्यात्मक समझ, वैज्ञानिक एवं गणितीय सूचना और कल्पना के पाठ के प्रयोग के साथ एक वास्तविक प्रसंग बढ़ता है।
(i) वातावरण में शारीरिक, यात्रिक और प्राकृतिक परिदृश्य के बारे में आकस्मिक चिंता का उपयोग बढ़ा है।

(j) 12 वर्ष की उम्र तक प्रारंभिक काल्पनिक डा अनुपस्थित हो जाते हैं।

(k) 12 वर्ष की उम्र तक प्राव: बच्चों द्वारा सामाजिककरण की उच्च योग्यता दिखायी देती है। वह समस्या का तार्किक विस्तारण कर सकता है और वह पर्यावरण के साथ नज़र रखता है, समझ और प्रतीकात्मक तरीकों से समझौता करता है। उनके पास उनकी व्यक्तित्व में सिद्धियाँ या नियमों का एक समूचा है जो कि व्यक्तित्व तार्किक और तोस है।

3. भावनात्मक विकास: भावनायें जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। भावनाओं के बिना जीवन नीतास और सूक्ष्म हो जाता है। ये बच्चे की उम्र के साथ बदलते हैं। इस अवधि के दौरान भावनात्मक परिवर्तनों को निष्कर्षित करने है:

(a) भावनात्मक अभिव्यक्ति के प्रारंभिक नमूने परिवर्तन हो गये है। बाद के बचपन की समाज पर बच्चः सामाजिक शिक्षाओं में अपने भावनात्मक अभिव्यक्ति को नियंत्रित करना सीख जाता है।

(b) बच्चः की भावनात्मक प्रतिकृतियाँ कम असंगत होतीं, बेहतर और समरूप होती है।

(c) भावनाओं मूंग बच्चों की अनुपस्थित में कभी भी अभिव्यक्त होती है।

(d) बचपन के दौरान भावनायें अधिक सक्रिय में होती हैं क्योंकि बच्चः अधिक पत्रकारिता प्राप्त होते हैं और दूसरों द्वारा आक्रामित होते हैं।

(e) प्रारंभिक बचपन में जानवरों, ऊंचे स्थानों और लुप्त आवाजों से डरता है तथा आत्मविश्वास स्थापित, काल्पनिक जीवों से डरता, असफल होने से डरता, उपस्थित होने और अपनी रूप से उपस्थित होने में डरता है।

(f) विविधता, विचार, अन्य बच्चों के साथ प्रतिकृति तुलना करने, प्रकृति में गतिविधियों के वांछित होने, साथीय और व्यक्तियों के माध्यम से उपस्थित होने और उपेक्षा आदि के कारण बच्चः उपस्थित होता है।

(g) बचपन में पैदा अधिक इच्छा को उपरा करता है।

(h) लड़कों को वैज्ञानिक का बस्ताव देने के कारण बच्चः का अधिकार इच्छादस्त होता है।

(i) आनंद, खुशी, प्यार, उत्सुकता, शोक और अनुपात बचपन में उपस्थित होते है।

4. सामाजिक विकास: प्रारंभिक बचपन में सामाजिककरण की प्रक्रिया घर और पढ़ाई के वातावरण को सीखने का देता है किन्तु बच्चः जैसे ही विभाग में प्रवेश करता है उसका सामाजिक पाया विस्तृत हो जाता है। मुख्य बदलाव निष्कर्षित है:

(a) यह वह समय है जब बच्चः उनके अपने लिंग वालों का साथी समूह बनाते हैं और घर से बाहर रहते हैं। साथी समूह सामाजिककरण का एक महत्वपूर्ण अभिकर्मक है।
बच्चों के समझन

(b) यह घर और विद्यालय में अवधारण के चरमों का समय है।
(c) इस अवधि के दौरान अवस्था की शिकायत सबसे अधिक होती है।
(d) बच्चे व्यक्त मानकों को नकार देते हैं और उनकी दोस्तों का दायरा विस्तृत हो जाता है।
(e) किशोरवयों का अपेक्षा इस अवधि के दौरान अपार अधिक होते हैं।
(f) लैंग्विक विभिन्नता अधिक तीव्र होती है। लड़कियां, लड़कियों के साथ और लड़के लड़कों के साथ खेलते हैं। खेल गतिविधियों में लैंग्विक विभिन्नता होती है। लड़कियां लड़कों के बीच अधिक विरोध होते हैं।
(g) लड़कियों का अपेक्षा लड़के अधिक विश्वास होते हैं और लड़कियों के समूहों की अपेक्षा लड़कों का समूह अधिक संगठित होता है।
(h) बच्छे समूह खेलों में अधिक रूचि लेते हैं। लड़के और लड़कियों अपने-अपने समूह बनाते हैं। समूह खेल विकसित होती हैं और बच्चा कम स्वाभाविक और स्व-केन्द्रित और आधुनिक होता है किन्तु अधिक सहयोगी और बहिंगानी होता है।
(i) सामाजिक चेतना अधिक तीव्र होती है। यह 'आयु समूह' अवधि कहलाता है जब बच्छा समान आयु के साथ समूह के साथ स्वाभाविक विकास करता है जो एक साथ अनुभव करते और कार्य करते हैं। बच्छे अपने समूह के साथ महान बश्चादि दिखाते हैं। वह अपने समूह के विचार के अनुकूल चलता है।

शैक्षिक तत्त्व

1. विद्यालय में उपयुक्त वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए और उन्हें उनकी अनुभूति को अभावित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
2. विद्यालय और घर में पुरुष और स्वतंत्रता की जानी चाहिए।
3. खेलों, सामूहिक गतिविधियों और फिटनेस आदि में धार्मिक का अवसर प्रदान करें।
4. लड़कों की लड़कियों से तुलना न करें।
5. बच्चों के साथ समजौता करते समय अपने दृष्टिकोण में प्रवाहात्मक हों।
6. बच्चों के दौरान आदर्शों के साथ अधिक सम्बंध होने में बच्चों के लिए अवसर प्रदान करें।
7. जब बच्छे भावात्मक विस्फोट प्रदर्शित करते हैं तो उस समय शांतिपूर्ण और बुद्धिमानी का व्यक्त करें।
8. बड़हे बच्छे को वैष्णविकार को आदर करें और बच्छों में विश्वास व्यक्त करें।
9. बच्छों के वांछित व्यवहार को बढ़ायें।
बच्चों को समझना

(10) यदि सबके के बच्चे साधी समुदाय के सदस्य हैं जिसका उनके व्यक्तित्व पर बुधद प्रभाव होता है।

(11) स्थानीय समुदाय में बच्चे के लिए विचार से िजत के अनुभव को प्रदान किया जाना चाहिए।

(12) स्वतंत्रता का अभिव्यक्त करने के अवसर और अपरिचित रूपों को आत्मविकास के दिशा में एक वाहनीय कदम के रूप में विचार किया जा सकता है।

(13) इस अवसर के दौरान बच्चों के समूह की सदस्यता को अभिव्यक्त करने और शिक्षकों द्वारा अप्रेसन नहीं करना चाहिए क्योंकि वह उन्हें स्व-अभिव्यक्ति, अति अकेलापन से भागाने, प्रत्याशाने और सुरक्षा का अनुभव का अवसर प्रदान करता है।

(14) शिक्षण में रूचि और शौक विकसित की जानी चाहिए।

(15) प्रयोगीकरण का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।

(16) साहित्य प्रदान करना को प्रत्येक विद्यार्थी को जाना चाहिए।

(17) विद्यालय को विद्यार्थी वातावरण का अनुभव प्रदान करता चाहिए।

(18) खेलों और मानवीय गतिविधियों में कौशलों को विकसित किया जाना चाहिए। लड़कियों और लड़कों को विभिन्न प्रकार के निरीक्षण दिये जाने चाहिए।

(19) भाषाओं को उपलब्धि दिखाने के प्रशंसित किया जाना चाहिए। भाषनात्मक रूप से स्वतंत्रता ने लाभ प्रदान करने में उदयक रूप में निरीक्षित बनानी चाहिए।

गति कौशलों और ज्ञान का विकास

बुधद परिप्रेक्ष्य में हम गति कौशलों और प्रतीकात्मक कौशलों में भेद कर सकते हैं। गति कौशल वे हैं जिनमें प्रतीक प्रतीकात्मक कौशल तथा शरीर और इसके अंगों के प्रतीक गति कौशल शामिल हैं। इनमें विचारणीय बैठक विश्वास है। कुछ लोग आसानी से एक नया गति कौशल अच्छा हो सकता है जबकि अन्य इसका केंद्र एक सही श्रेणी प्राप्त कर सकते हैं। इनमें शारीरिक राशि और शीतलता का आधार के साथ विविधताएं भी हैं। प्रतीकात्मक कौशलों में भाषा, अंक और चित्रकला शामिल हैं। इन प्रतीकात्मक कौशलों के आधार में मुच्छ शारीरिक जांच के लघु-परिप्रेक्ष्य और तुच्छ, प्रक्रिया तथा समस्याओं का शीतलता और आसानी से समाधान करने में सक्षम है। अपने उन्नति और लिखित कौशलों से बहुल अनुभवों को दूसरों का संदेख कर सकता है। ऐसे क्षेत्रों में विश्वसनीयता का बनावट हैं कि प्रतीक आदर्शों की महत्तम आदर्शता को संस्थापित करते हैं। गतिशील प्रतीकात्मक कौशलों के अर्जन के समापन में साथ वैकल्पिक विनिविधन हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग प्रतीकों का आसानी से और धाराप्रवाह प्रयाग कर सकते हैं जबकि दूसरे धीरे से और हिरासतकार के साथ बोलते हैं। कुछ के लाख बुधद ज्ञान होता है जबकि अन्य के पास बहुत योग्य। सांसों की बंगालता के संबंध में वैकल्पिक विनिविधताएं भी होती हैं। विद्यार्थियों की मानक स्तर परिस्थितियों का पुर्यावधान लगा सकती हैं और अधिक समस्याओं के लिए तैयार हो जाते हैं ताकि वे उनकी बहुत संभावना के
साध-साध अन्य मानवीय सत्ताओं को अधिक प्रभावी तरीक़े से नियन्त्रित कर सकते हैं। हमें समझना चाहिए कि यह गति कौशलों के साथ-साथ अतिक्रांतक कौशलों को प्राप्त किया जाता है और उनके विकास के क्षेत्र मार्ग है।

गतिकौशलों में निम्नलिखित विकास स्थान लेते हैं:

(a) गति चालक और हस्त तालय कौशल:

एक बुद्धि परिप्रेक्ष्य में हम गति कौशलों को गतिचालक और इस्तालाख कौशलों में वर्गीकृत कर सकते हैं। गतिचालक कौशलों में कुछ गतिविधियां जैसे जानलेवा, चढ़ाना, चलना शामिल हैं। इस्तालाख कौशलों में निपुणता के साथ वस्तुओं का रख-रखाव शामिल है। गति कौशल सभी आयु स्तरों पर बहुत महत्त्वपूर्ण है। नवजात शिशु सीमित और संकुचित रहता है। उस अन्यी गतिविधियों का विकास रहता है जब वह अपने हाथों और पैरों से अपने चारों ओर की वस्तुओं को छुड़ने में सक्षम होता है।

जब वह चलना सुरू करता है तो उसके संसार का विस्तार बहुत छोटा हो जाता है। ऐसा करने वाली भावनाओं में जब कच्चा बिस्कुट और दहलीज को पार करता है तो उसे उसकी जुड़ौं में एक महान पट्टा के रूप में गणना की जाता है। जब वह चलना सीखता है, उसकी गतिविधि का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जाता है और अभिमारण पर में स्थित वस्तुओं के प्रति अधिक साधन हो जाते हैं। जब हाथ या तोड़ी जाती हैं। इस प्रकार उन्हें चोटिल रहने के खतरे से बचाते हैं। किन्तु उनके अभिमारण जानते हैं कि तुरंत ही अर्थ को बाधा न दें आपको। गति कौशल शीर्षक प्रक्रिया, एथलेटिक्स और खेलों, कला और शिल्पों, बोलने, पढ़ने और लिखने सभी में शामिल हैं।

(b) गति क्षमताओं में वृद्धि:

बच्चा तीन प्रकार की गति अनुक्रियाओं को प्रदर्शित करता है:

(a) भेंट-छेंट, सामान्यकेली गतिविधियां या बच्चे को रामिल करते हुए सामूहिक अनुक्रियाओं।

(b) विशेष गतिक्रियाओं जैसे चूसना (प्रतिक्रिया, पकड़ना आदि)।

(c) जटिल व्यवहार नमूना चौकी रेते वाली अनुक्रियाओं जैसे कुछ प्रतिक्रियाओं के समायोजन को शामिल करता है।

गति अभ्यासों में वृद्धि का एक सबसे महत्त्वपूर्ण स्तर है। वस्तुओं तक पहुँचने और पकड़ने में अंख-हाथ के समायोजन का शामिल होना। समय के साथ 7-8 महीने का शिशु अधिक समय रखता है तक अपने खिलों और अन्य वस्तुओं को पकड़ने में वैद्यकिय गति संचालनों पर निर्भर नहीं रहता है। सबसे महत्त्वपूर्ण अवसर है कि वस्तु को देखना जहां गति क्रियाओं और दृष्टान्तधारक का
(d) कौशलों को सीखने के कुछ पहलूः

एक गति कौशल को सीखने में कंट्रीय स्नातक प्रणाली और कंकाली मानचित्रणों और आंतरिक मानचित्रणों के साथ स्नातक स्नातक प्रणाली से संबंधित होते हैं। कंकाली गति शीष, विशेष और सीमित होती है लेकिन दूसरी नहीं होती हैं। उसिंग या प्रशिक्षण में वाल मानचित्रण प्रणाली से भीमी और तनमुख समय तक दूर्दर्शन रहती है, यह विकसित और व्यापक भी होती है। ऐसा क्यों कि हम अपनी भावांका को सीमित नहीं रख सकते, न ही हम उन्हें तीक-तीक वाँचकर कर सकते हैं। इस उनकी वृद्धि को शामिल करता है।

कौशलों को सीखने पार मानचित्रण प्रणाली से कंकाली मानचित्रण प्रणाली तक एक परिवर्तन में होता है। सीखने के प्रशिक्षण संरचना में एक बच्चा तात्कालिक अनुभव करता है वैसे वह नई स्थिति से भविष्यत रहता है। ये प्रारंभिक हो सकते हैं कि वह एक नई स्थिति में रहे गये हैं या वह लाभ अनुभव करता है। तनाव का उदरश्र कहने के समायंत्र को संभालना है और नई स्थिति का सामना करने के क्रम में मानचित्रण के लिए ऊर्जा बनाया रखना। परिवारकर्ता बच्चा संघटन का अभ्यास में प्रशिक्षण करता है। उसी तरह बहुत से दुर्गारों के बाद नाखुज आत्मरक उद्धतों के साथ वह वस्तु, आसान और संदर्भित करते हैं।

किसी कौशल को सीखने के लिए उद्देश्य बहुत आवश्यक है। प्रथमतत्त्व अधिग्रहण सुनिश्चित करने के क्रम में उद्देश्य का एक अनुकूल स्तर स्थापित करना और बनाया रखना आवश्यक है। यह स्नातकरण का भी एक कारक है। एक व्यक्ति जिसे विविध प्रकार के कौशलों को सीखने के लिए सहजता का साथ नहीं कोई सीखने में सक्षम है। इस अवधि के पहले से रिश्वत प्रशिक्षण ठोंका या कम प्रभावी है। कौशल की जनता अधिग्रहण के साथ-साथ प्रवृत्ति के आयाम स्तर के दर को भी प्रभावित करता है। यह भी पाया गया है कि ‘मानचित्रित अभ्यास’ एक कौशल के अधिग्रहित में बहुत-कुछ सहायता कर सकता है। यदि अधिग्रहित अवधि गतित गतिशीलता को रखने का लक्ष्य करता और योग्यता बनाता है तो यह उनकी सहहता करता है। अतः अधिग्रहण और समय-समय पर अभ्यास के लिए संख्यात समय प्राप्त कर कौशलों को भूलना कम किया जा सकता है।
नैतिक विकास

नैतिक विकास, मानव सत्ता के सबसे महत्त्वपूर्ण विकासात्मक आवश्यक में से एक है। यह प्रायः
चरित्र विकास के रूप में प्रवर्तित किया जाता है। नैतिक व्यवहार या चरित्र व्यवहार के संपूर्ण
अभ्यास के रूप में एक अनिवार्य गुण के रूप में विचारित किया जाता है। मानव सत्ता जन्म
से न तो नैतिक न ही अनैतिक होते हैं। उनका चरित्र अभिव्यक्तिकरण, अन्य स्थितियों, पद्धतियों,
क्षण एवं विभागों के सहायता से, अन्य साधनों और बड़े समुदाय के सदस्यों के आदर्श पर
प्रभावित होता है।

चरित्र का विकास निम्नलिखित कारकों पर निर्भर है:

1. व्यक्ति का नैतिक बनावट
2. भौतिक वातावरण
3. सामाजिक प्रभावों
4. सांस्कृतिक संपर्क
5. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य
6. समुदाय के नियम-कायमों
7. सामाजिक-आर्थिक स्तर
8. अनुपत्ति के समय पौष्टिकता और मूल्य
9. सचेत प्रशिक्षण और
10. बड़े सदस्यों द्वारा दी गयी रण्ड एवं सजा

नैतिक विकास के चारित्रिक लक्षण:

स्तर के अनुसार नैतिक विकास के चारित्रिक लक्षण नीचे परिवर्तित हैं:

- जमा के समय बच्चा न तो नैतिक और न ही अनैतिक पैदा होता है।
- परिशिष्ट और अनुभव के माध्यम से वृद्धि के लिए श्रमितों के साथ वह पैदा होता है।
- बच्चा निर्धारित प्रकार के आचरण प्रदर्शित कर सके उसके पहले अपेक्षित परिपत्र का व्यवहार है।
- उसे नैतिक या अनैतिक के विकास को नेतृत्व प्रदान करने के लिए अभिव्यक्ति दुबारा प्रदान रण्डट्टों एवं सजाओं के अन्देशे के रणनीतिक आचरण के प्रतिमाओं को घर गो बहाल है।
- पूर्ण विकासात्मक स्तर में-सजीव अनुभव के समय मूल्य प्रदान कर और व्यवहार को
- स्वयंसंस्कृत एवं अन्य स्वयंसंस्कृति के माध्यम से इच्छित आचरण विकसित करने में शिक्षक क्षेत्रों
की सहायता करते हैं।
बच्चों को समझना

- खुशी और कष्ट के सिद्धांत के माध्यम से, बच्चा वृद्धि समाज की स्वीकृतियों और
  अपेक्षाओं को जानने के करीब आता है।

बच्चनः

- इस अवधि के दौरान, अनुरूप नातिक स्पष्टात्मक प्रतिक्षाओं जिनका वे अनुकूल करते हैं के माध्यम
  से बच्चों के नैतिक व्यवहार के दिशायम में साधी सामूहिक बिशिष्ट भूमिका निभाते हैं।
- बच्चों का समय गौर समूह से विन्यस्त होता है और उनके आवश्यक को संस्कृत करने में
  अभ्यासकों, शिक्षकों और अन्य समुदाय के सदस्यों द्वारा दिये गये पुरस्कार एवं दण्ड
  सहायता करते हैं।
- इन दो अवधियों के दौरान बच्चे सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानदंडों, लोकप्रियताएं एवं
  संस्कृति के साथ अनुकूलन करते हैं।
- कुछ धार्मिक अनुसंधानों का शुद्ध समाजकरण एवं धार्मिक व्यवहार के बिंदुक में सहायता नहीं
  करते हैं। कितने समझ और अनुकूल किया जाना चाहिए।
- इमानदारी, सत्यता, विवेकविनोदत्व आदि देव पादुक्क वैश्विक में सार्थक होते हैं।
- सत्य के जैसे गोवर लक्ष्यों को विकसित करने की शुरूआत के प्रति अवस्थान की उत्कृष्ट और
  स्व-निर्देशन की योग्यता।

1.6.2 शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के लिए विकास के स्रोतों के तात्पर्य

- वृद्धि एवं विकास का ज्ञान एवं विकास के सिद्धांत शिक्षणों के लिए लाभवन्य है। निम्नलिखित
  का परीक्षण करें और देखें कि ये क्षेत्र में आपके शिक्षण में सहायक हैं।

1. यह बच्चों के विकास के स्तर के अनुसार शिक्षकों को उनकी शिक्षण विधियों और शिक्षण
  के स्तर के साथ मिलाने में मदद करता है। वे विषय वर्तमान को प्रभावी ढंग से बच्चों को
  सम्प्रेरित कर सकते हैं।
2. ये बच्चों की अपेक्षाओं की सीमाओं के बारे में विचार मन हो सकते हैं। गतिविधियाँ उनकी आवश्यकता के अनुसार हो सकती हैं। ये जाना है कि बच्चों से कब और क्या अपेक्षा करता है।

3. ये निर्देश पहले बच्चों को सीखने में परिपक्वता की आवश्यकता को अनुचित कर बच्चों की उनकी समझ में अधिक प्रयासवादी हो सकते हैं।

4. ये विकासात्मक प्रतिमाओं के अनुसार अधिक प्रक्रियाओं की योजना कर सकते हैं जो हैं—विशिष्ट से सामान्य और सामान्य से विशिष्ट।

5. अंत: संबंध और अंत: निर्देश अनुसार पितांजलि प्रथम पहलु बच्चे के सामाजिक विकास में सहायता करते हैं।

6. प्रतिमा की समस्या, विकास को प्रभाव करते में प्रत्येक को तैयार करती है।

7. पर्यावरण की भूमिका को जानकर ये बच्चों के पालन पोषण में पर्यावरणीय स्थितियों पर पर्यावरण ध्यान रख सकते हैं।

8. मानव जीवन की सभी अवधियों और स्तरों पर विकास एक सत्ता एवं अनुशंसा, प्रक्रिया है। अंत: हमें हमारे व्यक्तित्व के विकास के आधार में पूर्णता प्राप्त करने में हमारे विकास के आधार को अनुसरण करना होगा।

9. विशिष्ट वैश्विक विभिन्ताओं को समझने में वैश्विक विभिन्ताओं का ज्ञान और सीधांत हमें मदद करता है यह जीवन में भावनाओं में वाक्र विशिष्ट और विकास का आधार है। प्रत्येक बच्चे को सहायता उनकी अपनी रायों और सीमाओं के अनुसार विकासात्मक प्रक्रियाओं के साथ-साथ होनी चाहिए।

10. वृद्धि एवं विकास से समाज सीधांत विकासात्मक रास्ते पर बच्चों की उन्नति के लिए एक प्रतिमा की सुविधा देता है। एक विशेष विकासात्मक लक्ष्य पर उपयुक्त वृद्धि एवं विकास के संबंध में क्या आवश्यकता की जा सकती है के, जानकर हमें यह जानने में सहायता दे सकता है।

**प्रश्नोत्तरी - 6**

- क्या एक बच्चे की वृद्धि एवं विकास का ज्ञान शिक्षकों को उनकी विचारण विधियों के बेहतर संगति में मदद करेगा? 100 शब्दों में लिख।

---

**प्रारंभिक शिक्षा में डिस्क्सीशन (डी.एल.एच.)**
1.7 बच्चों की वृद्धि एवं विकास में शिक्षक की भूमिका

एक शिक्षक विभिन्न सामाजिक-आर्थिक और सामूहिक पृष्ठभूमि के बच्चों के साथ मिलता है जिसमें विभिन्न आयु स्तरों पर उनके बीच विस्तृत प्रकार की वैश्विक की विभिन्नता होती है। समाज के एक प्रेक्षक के रूप में शिक्षक बच्चों के व्यवहार में इतिहास परिवर्तन की ताकत नहीं होती है तथा वे राजीव कविता की प्रक्रिया को तंत्रज्ञ करते हुए एक अनेक नागरिक के उत्तराधिकार को सहायता दे सकते हैं। विकास के अध्ययन का दृष्टांक हैं-भूत से वर्तमान की इसकी सततता और वर्तमान को इसके पूर्व के इतिहास से समझ जा सकता है। विद्यालय जाने से पहले बच्चा अपने पर्यावरण से अर्थव्यवस्था अनुभवों की चर्चा कर सकता है जो प्रभावी होती हैं की वैश्विक शिक्षा शुरू करने में बहुत लाभदायक है। बच्चों के पीछे वैश्विक भागीदारी में शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक शिक्षक को अपनी कक्षा के प्रत्येक बच्चे की अंतर्विद्वेशों और क्षमताओं को अवश्य जानना चाहिए ताकि वह व्यवहार और समाज के लाभ के लिए उनका अधिकतम लाभ उठा सके। शिक्षक को वृद्धि एवं विकास के निर्यात के लिए प्रभावी विद्यालयिक धारण करने में विभिन्न आयु स्तरों पर विश्व विकासात्मक आदेशों के अनुसार सघनता है। पढ़ाई के साथ पारस्परिक विषय के कारण एक बच्चे की स्थिति पूर्वक बदलते व्यवहार को एक आदर्शी शिक्षक को समझना है।

एक अच्छी शिक्षक एक बच्चे के वर्तमान जीवन और उसके संपूर्ण भविष्य में इस प्रकार समझता है:

1. शिक्षक के दमोधर, समस्त और बनन तथा समुदाय के परिवार के स्थान की स्थीति और हज़रत की दक्षता और इताको एकता और इसके आर्थिक स्थायित्व के माध्यम से सुरक्षा के लिए बच्चे की जरूरतों से मिलता है।

2. प्रसंग को प्रस्तावित करने में पर्यावरण सफलता के साथ कार्य के अनसरों, अन्यों को मदद करने सेवाओं के अवसरों, निर्धारण के लिए प्राकृतिक इच्छाओं के साथ स्वतंत्रता से हस्तक्षेप के माध्यम से निपटने के लिए बच्चे की जरूरतों से मिलता है।

3. पर्यावरण में अन्य बच्चों के साथ अनुभव के माध्यम से, व्यक्तिगत विद्यालय के माध्यम से, आदर्शों में प्रशिक्षण के माध्यम से, अन्य लोगों के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के साथ सामाजिक से जीवन जीना सीखने में निदान के माध्यम से प्रारंभिक सामाजिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

4. प्रशिक्षण का ज्ञान डालने में उनके प्रसारण के माध्यम से, उन्हें खेल के लिए स्थान एवं सामग्री देने के माध्यम से मानविक विकास के लिए अवसरों को प्रदान करता है।

5. एक आदर्शी शिक्षक बच्चे को उसकी भावनाओं एवं योग्यताओं के विकास के लिए एक मैदानी पूर्ण एवं आत्मविश्वास वातावरण प्रदान करता और प्रतिभात सामाजिक स्वीकार के एक समूह में संबंध सुनिश्चित करता है जहाँ उसे प्यार, सुरक्षा और प्रसारण दिया जाता था।
1.8 सारांश

एक बच्चे की वृद्धि और विकास एक व्यस्क के रूप में होता है। वृद्धि, ऊंचाई और वजन में परिवर्तन है, जबकि विकास, कार्य और चरित्र में परिवर्तन है। आधुनिकता और पर्यावरण वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करते हैं। विकास के विभिन्न स्तर हैं—शैक्षणिक, प्रारंभिक बचपन, बाहर का बचपन और विश्वव्यापी। इन तरह के स्तर के दौरान एक बच्चा शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक रूप से विकसित होता है। एक शिक्षक को इन स्तरों के दौरान बच्चों के लक्षणों को समझना चाहिए और बच्चों को विविध और वैश्विक जुड़ते हैं ज्ञान में रखकर उपयुक्त शिक्षण विधियों का विकास करना और प्यार, स्नेह एवं प्रोत्साहन के द्वारा उनकी वृद्धि एवं विकास को पोषित करना चाहिए।

1.9 प्रश्नोत्तर

प्रश्नोत्तर-1
हां, वृद्धि और विकास से भिन्न है। वृद्धि लंबाई, चोड़ाई का आकार है जबकि विकास, रूप एवं कार्य या चरित्र में परिवर्तन लाता है।

प्रश्नोत्तर-2
ममता, विकासात्मक निर्देशन, सततता, एकरूपता, वैश्विक विभिन्नता, सामान्य से विशाल उत्तरों को बढ़ाना, एकीकरण, अंतः संबंध, भविष्यवात्तकता को सिद्धांत।
प्रगति जाँच-3

बुद्धि, कोशिकीय गुणन है जैसे—ऊंचाई वजन में वृद्धि आदि, विकास, सभी अंगों का संघटन है जो वृद्धि को उत्पन्न करता है।

प्रगति जाँच-4

विकास के प्रमुख स्तर है:—जन्म से 2 वर्ष-जैसव, 2-6 वर्ष प्रारंभिक विकास, 6-12 वर्ष बाद का विकास और 12-19 वर्ष किशोरवयस्का।

प्रगति जाँच-5

बुद्धि एवं विकास के विभिन्न स्तरों पर वैज्ञानिक विकासियों को समझना।

प्रगति जाँच-6

आत्मात्मिक एवं बाह्य कारक

प्रगति जाँच-7

एक शिक्षक समझकर, देखभालकर, तारा और अनुग्रह प्रदान करे, बच्चों के भोजन की अवधियों को ध्यान में रखकर बच्चे को सहायता कर सकता है।

1.10 संदर्भ प्रथम एवं उपयोगी पुस्तकें


1.11 अन्तिम इकाई अभ्यास

1. बुद्धि एवं विकास की परिभाषा दे।
2. बुद्धि एवं विकास के सिद्धांत का वर्णन करे।
3. प्रारंभिक विकास के दौरान भावनाओं और बौद्धिक विकास के किन कह दो लक्षणों की सूची बनायें।
4. एक बच्चे की बुद्धि एवं विकास पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारकों पर विचार करे।
5. एक बच्चे की बुद्धि एवं विकास में एक शिक्षक कैसे सहायता कर सकता है?
इकाई-2 आनुवंशिकता एवं वातावरण

संरचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 अधिगम उद्देश्य

2.2 आनुवंशिकता का अभिप्राय

2.3 वातावरण का अभिप्राय

2.4 आनुवंशिकता के पक्ष में तर्क

2.5 वातावरण के पक्ष में तर्क

2.6 आनुवंशिकता और पर्यावरण के सार्वजनिक अभिप्राय

2.7 शैक्षिक तात्पर्य

2.8 सारांश

2.9 प्रश्न जांच के उत्तर

2.10 संदर्भ प्रथम एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.11 उद्धेश्यावली

2.12 अन्य इकाई आधार

2.0 प्रस्तावना

विद्यालय स्तर पर कार्यालय शिक्षकों के रूप में आपको अपनी ध्यान देना चाहिए कि अधिगम उद्देश्यों संकल्पनाओं का अधिगम चेनना पूर्वक करते हैं। अधिगमकर्ताओं में से कुछ शीघ्रता से सीखते हैं और कुछ अन्य अधारे-धारे। उद्देश्य के लिए-एक फूल या एक जैत्र का आरेख खींचने का एक क्रेस लेते हैं। आप ऐसा करों सोचते हैं कि अधिगम में कुछ प्रकार की विबिधता होती है। अपने उनकी शिक्षा या विधानस्वरूप विषयों में शैक्षिक उपलब्धि में एक निरंतर विविधता अवस्था अद्यतनित किया होगा। ऐसी विविध अनुभूतियों के कमा कारण हो सकते है? एक स्कूल के उत्तर देना काठंब हो सकता है। इस प्रश्न के उत्तर के रूप में दो स्पष्ट कारण हो सकते हैं। वे इस प्रकार हैं–

(i) आनुवंशिकता और (ii) पर्यावरण
आनुवंशिकता एवं वातावरण

बच्चे की समझ के प्रथम इकाई में वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों से संबंधित वर्णन किया गया है। यह इकाई आनुवंशिकता और पर्यावरण की पूर्विका पर कोई संबंधित करेगा। आनुवंशिकता को एक अतिरिक्त कारक के रूप में और पर्यावरण को एक बाह्य कारक के रूप में विचारित किया गया है। इसके अतिरिक्त आप विवरणों के अधिगम को समझ करने और अपने शिक्षण के बेहतर संपर्क में, आनुवंशिकता और पर्यावरण के शैक्षिक तत्वों के बारे में भी सीखेंगे।

2.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप सक्षम होगे:

- आनुवंशिकता की संकल्पना को परिभाषित करने में
- आनुवंशिकता की वर्णन को समझने में।
- पर्यावरण की संकल्पना और उससे संबंधित कारकों का वर्णन करने में।
- आनुवंशिकता और पर्यावरण को व्यक्ति के लिए अस्थायी कारक के रूप में वर्णित करने में।
- अधिगम में निर्देश को समझने में।
- शिक्षण-अधिगम में आनुवंशिकता और पर्यावरण के शैक्षिक अभिप्राय को भेंट करने में।

2.2 आनुवंशिकता का अभिप्राय

आनुवंशिकता, निर्विरोध अण्डादू में उपस्थित संभावित विशेषताओं का संपूर्ण योग है। शही विशेषताओं जिन्हें हमें ने अभिप्राय के संबंध में बेहतर विश्लेषण किया है, आनुवंशिकता कहलाती है। अभिप्राय जानने के बाद एक व्यक्ति को आनुवंशिकता के बनावट के बारे में जानना अत्यंत अविच्छेदनीय है। मैं कौन रूप से बच्चा जैसे जन्म लेता है? जवाब एक मात्र कोशिका से शुरू होता है।

संकल्पन समय:

नर और मादा जनन कोशिकाओं के संयोग से अण्डादू निर्मित होता है। निर्मित अण्डा युग्मन (zygote) के रूप में जाना जाता है।

![Diagram](image)

क्लास 1 : बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास की समझ
प्रयोग गुणसूत्र में लगभग 40 से 100 जीन होते हैं। जीन विशेष गुणों के विकास के लिए उत्साहित हैं। Peterson के साथ में आनुवंशिकता को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है “अपने अभिभावकों के पैतृक भूमिका से क्या प्राप्त है।” Douglas और Holland कहते हैं—“आनुवंशिकता में अभिभावकों एवं पूर्वजों से व्युत्पन्न राशितिक, चारितिक, कार्यों वा क्षमताओं को संयुक्त सरलताओं होता है।" F.L. Rach आनुवंशिकता को जैविक रूप से संचालित कारकों को समूह में विचार करने से जो शरीर के संरचना को प्रभावित करता है। अधिगम एवं संस्कृति कारकों की उपस्थिति परिवारों को समझने के लिए एक कैसे अध्ययन के माध्यम को अपनाते हैं।

### आनुवंशिकता पर एक कैसे अध्ययन

Prileure एक महान गणितज्ञ और विद्यानुसारक है और उनकी पत्नी मेघना (Meghana) अनुवंशिक रूप से परिशिष्टक एक हिंदुपाली शास्त्रीय गायिका है। उनके दो बच्चे हैं। बेटा आर्य एवं सातवें 15 कर्न का है जो विज्ञान और गणित के अध्ययन में बहुत अधिक रूचि रखता है। वह वाद्य संगीत में भी रूचि रखता है। उसने पहले ही संगीत में सफलता में रहकर कुछ चैम्पियनशिप जीती है। उनकी एक 12 वर्षीय गुप्ता क्रिस्टिना है। वह संगीत और अंग्रेजी सभासत में बहुत अधिक रूचि रखती है। दोनों बच्चे विद्यालयी अध्ययन में खेल हैं जो अपने सभी विद्यालयी विषयों में लगभग 95% अंक प्राप्त करते हैं।

उपस्थित कैसे अध्ययन की सहायता से अपने अभिगम अध्ययन को जारी रखने से पहले निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें।

1. सबसे प्रमुख आनुवंशिक गुण जो आप बच्चे में पाते हैं—(सही जवाब पर चढ़ान लगायें)
   (a) गृहनामकता
   (b) विभाग आधारित अभिगम कौशलों के लिए सकारात्मक मनोवृत्ति
   (c) पुरुषीपूर्ण मनोवृत्ति
   (d) मनोवृत्ति में विकास

2. बच्चों में विज्ञान और संगीत के अध्ययन में प्रति प्यार विकसित करने में योगदान देने वाले काम क्या है?

2.3 वातावरण का अभिगम

पर्यावरण का अभिगम प्रेरणा की समूपता है जो कि व्यक्ति के चारों ओर बिना कुछ भी प्राप्त किये अवसर से टकराता है, को पर्यावरण कहा जा सकता है। Anastaxi के अनुसार पर्यावरण सबकुछ है जो व्यक्ति के जीवों के अतिरिक्त व्यक्ति को प्रभावित करता है। "Douglas और Holland के अनुसार—“पर्यावरण बाह्य शक्तियाँ, प्रभावों और स्थितियों का समृद्ध है जो जीवन, प्रकृति, व्यवहार, कृषि एवं विकास और जीवित अवस्थाओं को परिपक्वता को प्रभावित
करता है। पर्यावरण में विविध प्रकार की शक्तियां जैसे-भौतिक, सामाजिक, नैतिक, भावात्मक, आर्थिक, राजनीतिक, संस्कृतिक शक्तियाँ होती हैं। एक अनुकूल वातावरण बनचे की मजबूत योग्यताओं के विकास को पूर्णता करता है। Gliburt के अनुसार “पर्यावरण तात्क्षणिक पर्यावरण में कुछ भी है जो एक वस्तु और इस पर प्रयोक्त प्रभाव डालता है।

मानसिक पर्यावरण का अभिप्रयास है एक व्यक्ति के मानसिक विकास से लिए आवश्यक वातावरण से पर्योग्यक्ता, प्रयोगेश्वरी, पादस्थानी और पादस्थ सहायताएं सहतिकित्यों को उत्तरता रूप से संयोजित किया जाता है तो व्यक्ति इच्छित बौद्धिक विकास प्राप्त कर लेगा। इसलिए, शिक्षकों को उत्तम मानसिक पर्यावरण, कार्यसाधन, संग्रहालय, वक्त, संगठन, वांच-विचार, गोष्टी आदि प्रदान करने की कोशिश करनी चाहिए और इसे अवधि प्रत्यावृत करना चाहिए।

2.4 आनुवंशिकता के पक्ष में तकरी

जुड़वों का अध्ययन दो प्रकार के जुड़व बच्चे होते हैं—(i) समरूप (ii) प्रातु-सूलभ जुड़वा।

समरूप जुड़वा एक अर्थात से विकसित होते हैं। प्रातु-सूलभ जुड़वा वो पृथक अर्थात से अंकूर नहीं होते हैं। समरूप जुड़वा एक दूसरे के सहसा होते हैं और हमेशा एक ही लिंग के होते हैं। जबकि प्रातु-सूलभ जुड़वा वास्तव में एक समय पर केवल यात्रा और बहन होते हैं।

Thorndike, Newman, freeman, Wingfield और अन्य दूसरों ने जुड़वों पर अध्ययन किया है और उन्होंने निश्चित निकाला कि वैज्ञानिक विभन्नता उपलब्ध करने में आनुवंशिकता एक महत्वपूर्ण कारक है। एक दूसरा अध्ययन Wingfield द्वारा किया गया जिसका निष्कर्ष निम्नलिखित है:

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम संख्या</th>
<th>विवरण</th>
<th>बुझिलख्य और उनके बीच अंत:संबंधों के गुणांक</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>समरूप जुड़वा</td>
<td>0.90</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>प्रातु-सूलभ जुड़वा</td>
<td>0.70</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>सहोदरों</td>
<td>0.50</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>अभिमानकां और बच्चों</td>
<td>0.31</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>असंबंध बच्चे</td>
<td>0.30</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उपरुपक समी अध्ययनों ने निष्कर्ष निकाला है कि एक व्यक्ति के जीवन में आनुवंशिकता एक महत्वपूर्ण कारक है। चौदहवीं से अलग दुर्लभ समरूप जुड़वा, एक साथ रहने वाले दुर्लभ समरूप जुड़वा की अपेक्षा कुछ अधिक प्रभाव होते हैं। किन्तु बी पी वो अधिक समान होते हैं। अनुवंशिकता या तो साथ या अलग रहने वाले प्रातु-सूलभ जुड़वों से। प्रातु-सूलभ जुड़वा बुझिलखा में सामान्य सहोदरों की अपेक्षा अधिक समान होते हैं। इसका अर्थ है कि संबंधों में जितना निकटता होती है बुझिलखा में अंत:संबंधों के अंक उन्हें ही अधिक होते हैं।
2.5 बातावरण के पक्ष में तर्क

Freeman ने सिद्द किया है कि 71 बच्चे जिन्हें तुच्छ बातावरण से हानकार अच्छे बातावरण में रखा गया उनमें Binet के 10 विचारों के मानसिक पैमाना पर एक बुद्धि प्रदर्शित किया। वह एक व्यक्ति के जीवन में पर्यावरण की पूर्वकाल की न्याय संगत ठहरता है।

James-Reace का अध्ययन: दो जुड़वे जिन्हें क्रमशः एक पहाड़ी और एक गांव में घूमते जा रहे सिद्द किया गया था। जब उनकी बुद्धि को जांचा गया था तो उनमें 19 अंकों का अंतर पाया गया था। यह बुद्धि पर पर्यावरण के प्रभाव का एक स्पष्ट संकेत है। अब क्या बच्चे के लक्षणों और वैज्ञानिक अन्तर (a) अनुवादक (b) पर्यावरण (c) या दोनों के कारण हैं?

यदि ऐसा है तो बच्चे के विकास और वैज्ञानिक अन्तर पैदा करने में आनुवादक एवं पर्यावरण का क्रिया विस्तृत और सार्वजनिक भूमिका है। इसका तात्त्विक बिन्दु उपन्यास करने में आनुवादक एवं पर्यावरण दोनों समान रूप से उत्तरदायी है।

पर्यावरण पर एक केस अध्ययन

अनिल एवं मुनील कक्षा 10 के विद्यार्थी हैं। वे नई दिल्ली के किंग ज़र्ज विद्यालय में पढ़ रहे हैं। दोनों विद्यार्थी एक समस्या व्यवसायिक परिवार से हैं। दोनों का लक्ष्य हाउस विश्वविद्यालय, अमेरिका में MBA करना है। उन्हें विश्वविद्यालय ने व्यापार एवं विवेचन का अध्ययन करने का सलाह देते है। उन्हें अपना प्रयास संयम से मेल बना करने का सलाह देते हैं–उन्हें भी व्यावसाय से भर्ती है। दोनों ने पत्रिका में भारत में अर्थिक सुधार पर कुछ अनुच्छेद लिखा है। आपने विषयों में इसकी प्रस्तुतियों से भी रुचि की है।

उपरूपक केस अध्ययन की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप उत्तर दें।

(1) विद्यार्थियों के प्रभावी गुण क्या है?
(2) विद्यार्थियों ने कैसे इस प्रकार के गुणों को पाया?
(3) आप कैसे न्याय संगत ठहरते हैं कि बच्चों की जीविका के नरमहंस लक्ष्य है?
(4) उनकी जीविका के लक्षणों को प्रभावित करने बालों का कारक है?

2.6 आनुवादक एवं पर्यावरण के सार्वजनिक अभिप्राय

आनुवादक को जीविका एवं समस्याओं को समझने के लिए परिभाषित किया गया है जो सरोवर को संरचना को प्रभावित करता है और पर्यावरणीय रिश्तों की समझना है जो व्यवहार को प्रभावित करता या व्यवहार में आनुवादक (बदलाव) लाने का कार्य करता है।
हाइड्रोलल का निःशुल्क तरीका

आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों एक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण हैं, दोनों विकास के निश्चित एक हैं। Ross के अनुसार एक व्यक्ति के जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के तरीके का निर्धारण करने में इन कारकों को क्रिया कर्मी-क्रमी निम्नलिखित सूत्र में अभिव्यक्त किया गया है:-

\[ H \times E \times T = DL \]

आंवलस्कता X पर्यावरण X समय = एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास का सत्ता। इस सूत्र से यह निःशुल्क निर्धारण है कि वह बहुत निश्चित है कि या तो आनुवंशिकता या पर्यावरण अठारह कार्य करते है। एक व्यक्ति में होने वाले विकास के लिए दोनों आवश्यक हैं।

आनुवंशिकता केवल कुछ प्रकार के पर्यावरण में ही कार्य करता है। बिना पर्यावरण के यह व्यक्ति है और पर्यावरण बिना आनुवंशिकता के कुछ नहीं है। इसलिए यह ज्ञात है कि दोनों व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। आनुवंशिकता हर्म शारीरिक, सांस्कृतिक, व्यक्ति या लक्षण आदि देता है और पर्यावरण उन्हें विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। Landis और Landis ने कहा कि “आनुवंशिकता हमें विकसित देते हैं क्षमताओं की त़रह है जिन्हें इन क्षमताओं के विकास के लिए अवसर प्रदान करता है।” Woodworth के अनुसार, बच्चे की वृद्धि एवं विकास में दोनों समान रूप से अधिकर्ष हैं।

व्यक्ति आनुवंशिकता एवं पर्यावरण को बीच गुणन का अभिव्यक्ति है। व्यक्ति को एक आवश्यक के श्रेणी के दुनारा व्यक्ति किया गया है जहां आनुवंशिकता आभार और पर्यावरण दोनों है। आभार का श्रेणी केवल आधार वर्ग के ऊर्जा पर निर्भर नहीं होता है, यह दोनों पर निर्भर करता है। उसी प्रकार, व्यक्ति आनुवंशिकता एवं पर्यावरण का पर्यावरण है। आनुवंशिक संबंधों का विकास पर्यावरण का एक विषय है।

श्रेणी = आभार \times ऊर्जा

आनुवंशिकता और पर्यावरण पृथक्कर से कार्य नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति आनुवंशिकता से युक्त होता है, ये विशेषताओं उनके पोषण के लिए एक पर्यावरण विकसित करती है।

Murphy ने बिल्कुल ठीक चिह्नित किया है “आनुवंशिकता को केवल विशिष्ट पर्यावरणीय सामग्री के माध्यम से आनुवंशिक संबंधों को युक्ति के दुनारा ही जाना जाता है, यह उतना ही युक्ति है जितना कि पर्यावरणीय दिशाओं के कार्य, जैसे यह अवधि या संभवत हो जा करता है।” निम्नलिखित आकृति दोनों दृष्टिकोणों को व्याख्यात करते हैं जो निम्न हैं:-

उपरोक्त सिद्धांतों में आनुवंशिकता दुनारा प्रदान की गयी है और पर्यावरण इन सीमाओं के बाहर नहीं जा सकता। किंतु यह आनुवंशिकता दुनारा दी गयी क्रमों समस्याओं के अधिकतम विकास में सहायता करती है। आनुवंशिकता क्रमों सामाजिक आपूर्ति करती है, संस्कृति डिजाइन आपूर्ति करती है जबकि परिवार शिल्प नहीं है, क्योंकि यह अभिव्यक्ति ही है जो समाज की संस्कृति को बच्चे तक पहुंचाते हैं।
2.7 शैक्षिक तात्विकता

शिक्षक की ओर से आनुवंशिकता और पर्यावरण की सामग्रिक पूर्ववर्ती का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। कारण वह अधिकांश अथवा तत्त्व समझने में अपने विद्यार्थियों की सहायता का सही कारण देने का काम कर सकें। दोनों कारकों का ज्ञान के लिए गणनात्मक या अंशीयों के अधिकांश में अपने विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक विचारधाराओं का पता लगाने में शिक्षक की सहयोग करता साथ-ही-साथ तदनुसार उसकी समझ, विचारधाराएं और तकनीकों का सामना करने में (जैसे प्रोजेक्ट विधि और स्पष्टतापूर्वक शिक्षण तकनीकों) सहायता करता।

शिक्षक को बेहतर शिक्षा और सही पर्यावरण प्रदान करने की तीन अवसर करनी चाहिए। प्रत्येक विषय में कम्प्यूटर प्रयोगात्मक और पत्रकारिता सुविधाओं प्राप्त करनेवाले उसे बच्चे उनकी बोधानता और साथ-ही-साथ उनके पर्यावरण का अध्ययन करना चाहिए तथा उन्हें विकास के लिए योजना अवसर बनानी चाहिए। इस संबंध में Sorensen ने थोक ही विचार किया है कि शिक्षक के लिए शायद, आनुवंशिकता की रास्तियों का सामग्रिक प्रारम्भ, और मानवीय विकास का पर्यावरण और उनके अंतः संबंधों का एक महत्व अभिमान है। शैक्षिक उपलब्धि का उच्च स्तर विश्वास के बाद वर्तमान पर निर्माण करता है।

विश्वास को बच्चों के लिए प्राथमिक एवं परामर्शाध्यापन गतिविधियों (जैसे- विवाद और साहसिक प्रतिद्वंद्व) का समुच्चय कार्यक्रम प्रदान करने पर केंद्रित करना चाहिए। उसके पास बेहतर शैक्षिक, व्यावहारिक, वैज्ञानिक विद्वानों और पारंपरिक तथा व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम होने चाहिए। यदि उनकी आनुवंशिकता और पर्यावरण ज्ञात है। इस प्रकार के असाधारण बच्चों (जैसे- प्रतिभाशाली, सामान्य, औसत, विकल्प बच्चे और शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चे, प्रथम पीढ़ी के अधिग्रहकारों) का सामना करने में शिक्षक के लिए आनुवंशिकता और पर्यावरण का ज्ञान होना बहुत अधिक अनिवार्य है।

1. अधिकांश को पूर्ववर्ती: पूर्व ज्ञान, बुद्धि, परिवारिक पूर्ववर्ती, रूचि का अध्ययन, अभिव्यक्ति और मनोवृत्ति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उपलब्धि के अन्य क्षेत्रों में कुछ बेहतर करने में कुछ विद्वानों फिर जाते हैं। अतः शिक्षक को विचारधाराओं के लिए एक संज्ञानी वातावरण अपने प्राप्त करना चाहिए तथा उनके साथ समान व्यवहार करना चाहिए। पर्यावरण के साथ संबन्ध बनाने में शिक्षक को उन्हें प्रेरित करना चाहिए।
2. कुछ व्यक्ति हैं जो बहुत से कारकों के कारण समूह के मानदंडों से विचलित हो जाते हैं। अतः, क्षेत्रीय व्यक्ति को अपने शिक्षा की ओर श्रमिक, अभिज्ञ, भूमिका और अनावश्यक विशेषताओं को जानने को कृतिकर्म करनी चाहिए और इस ज्ञान के प्रकाश में उन्हें उनकी अंतःशक्तियों को अधिकतम उपयोगिता के लिए वैधाकिक दिशा निर्देश देना चाहिए।

3. क्षेत्र कक्ष में विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए। वह विभिन्न व्यक्तियों को उनकी रुचियों और समय के स्तर के अनुसार जमानत को पॉष्टित करने में सहायता करता है।

4. विद्यालय व्यक्तित्व विकास के लिए होना चाहिए। विद्यालय को नीति, समूह गतिविधियों, अनुवादकों का पुरुष-भूमिमूल में खड़े और अभिनवज्ञान के पर्यावरण पर कार्यक्रमों को आयोजित करना चाहिए।

5. प्रत्येक विद्यालय का एक दिशानिर्देश और परामर्श केंद्र होना चाहिए।

2.8 सारांश

शिक्षा, बच्चे की वृद्धि एवं विकास के महत्त्वपूर्ण रूप से जुड़ी होती है। बच्चे का संरचनात्मक विकास करना, उसकी ध्यानदर्शक का विकास करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। यह कहा जाता है कि बच्चे कुछ जम्मा रोचकताओं के साथ खेला होता है जिसका विकास समृद्ध वातावरण में शिक्षा द्वारा किया जाता है। विकास संरचना एवं वातावरण का अनुसरण का गुण दर्शाता है। अनुवादक कहते हैं कि आनुवादकता ही सब कुछ है तथा आनुवादकता का एक वैधाकिक के सभी गुणों का निर्धारण करती है। आनुवादकता किसी व्यक्ति के ज्ञान के माध्यम से गुणों का बोध है। वातावरण के अनुसार वें सभी कारक हैं जो बच्चे को सीखने के लिए प्रभावित करते हैं। गर्मियाँ के बाद बच्चे का विकास सीखा होगा, यह वातावरण तथा आनुवादकता के बीच की अनुक्रमणिका पर निर्भर करता है। अनुसंधान बताते हैं कि प्रत्येक गुण के विकास के लिए आनुवादकता तथा वातावरण दोनों ही उत्तरदायी होते हैं। बालक के विकास हेतु आनुवादकता तथा वातावरण दोनों ही बालक की भूमिका का निर्धारण करते हैं तथा साथ-साथ कार्य करते हैं, दोनों ही बच्चे की उपलब्धि के लिए जिम्मेदार हैं। दूसरे राशि में हम कह सकते हैं कि आनुवादकता तथा वातावरण एक दूसरे के पूरक हैं तथा दोनों एक ही सिक्के के दो पहलु हैं।

प्रश्नात्मक जाँच-1

1. आनुवादकता क्या है?

布莱克 1：儿童的总体发展和教育
2. पर्यावरण क्या है?

3. आनुमानिकता के क्या कारक हैं?

4. पर्यावरण के क्या कारक हैं?

5. आप कैसे कह सकते हैं कि पर्यावरण की अपेक्षा आनुमानिकता अधिक महत्वपूर्ण हैं?

6. पर्यावरण के प्रक में क्या तरी क्या है?

7. आनुमानिकता और पर्यावरण के अध्ययन का सापेक्षिक महत्व क्या है?
2.9 प्रगति जांच के उत्तर

1. आनुवंशिकता एक प्रक्रिया है जिसमें कोशिकायें अभिव्यक्तियों से शारीरिक और मानसिक
   विस्तारों को अपनी सत्तियों में ले जाते हैं।

2. पढ़ाई जिसमें किसी एक व्यक्ति अपनी वृद्धि एवं गतिविधियों के लिए प्रेरण प्राप्त करता है
   जिसमें सारीकर्ता, मानसिक एवं भावात्मक पहलुएं शामिल हैं।

3. आनुवंशिकता के कारक हैं जीन, शारीरिक उपस्थिति, ऊजाई, बच्चे, चमड़े का रंग और
   समी प्रतिक्रियायें।

4. पर्यावरण उन सभी कारकों को शामिल करता है जिन्हें हम अपने आस्थाप से देखते और
   सुनते हैं। इसमें पर्यावरण के शारीरिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पहलुएं हैं।

5. यह स्थायीकाल है कि एक बार एक बार के अभाव को जन्म देता है, यह एक हाथी
   के अभाव को जन्म नहीं देता है। सत्तियों और अभिव्यक्तियों के साथी प्रभावों और
   अनुवंशिकता रूप से उत्साहित में प्राप्त करता है। उदाहरण के लिए, बच्चों के अभिव्यक्तियों के
   बच्चे जीना पैदा होते हैं।

6. पर्यावरण एक व्यक्ति के व्यवहारिक पहलुओं को निश्चित रूप से प्रभावित करता है।
   उदाहरण के लिए, जिसमें बच्चों जो अलग-अलग परिस्थितियों में पाएं तो वे अनुवंशिकता के
   गुणों को प्राप्त करने की ओर अमूक रहते हैं (जैसे- भाषा का अर्ग व्यवहार पर निर्भर
   करता है)। एक अधिकतम अभिव्यक्ति के जीना भवन 10 वर्षों का होने से पहले 10
   भाषाओं सीख सकता है।

7. एक व्यक्ति के वृद्धि में आनुवंशिकता और पर्यावरण का भूमिका अद्भुत है और जैसे- जैसे वे
   समान चिकित्सकों के पहलुओं हैं। एक व्यक्ति आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों का उत्पाद है।
   यह तो आनुवंशिक कारकों के या पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव का स्तर अभिव्यक्तियों द्वारा
   बच्चों को प्रभावपन को आपसी पर परिवर्तित हो सकते हैं। जैसे- (जैसे- वीज और
   मिट्टी-पौधे और पौधे और विवेक-मार्ग) उनमें सारी अभिव्यक्ति को मुख्तारी
   दिखाने के लिए दिखाये गये हैं।

8. आनुवंशिकता और पर्यावरण के अभाव के शैक्षिक तत्त्वों इस प्रकार है- आनुवंशिकता
   और पर्यावरण का अस्तित्व वैकल्पिक विभिन्नता के आकृतिक तत्त्वों को समझने में
   विभागों का समर्थ बनाता है और अधिगम में विभिन्नता को न्यूटम करने में कस्काकश
2.10 संदर्भ प्राथमिक एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें


(4) Sharma, Sagar & Nanda, SK (1967) : Fundamental Educational Psychology. NBS Educational Publishers, Chandigarh.


2.11 शब्दावली

| आनुवांशिकता | भौतिक और मनोवैज्ञानिक गुण जिन्हें बच्चे अपने अभिमानों से उत्तराधिकार में प्राप्त करते हैं। |
| पर्यावरण | पढ़ों किसी के एक बच्चा/बच्ची सभी समस्तों को शामिल करता है जो बच्चा बाह्य संसार से प्राप्त करता है। |
| मनोवृत्ति | यह मस्तिष्क की एक स्थिति है जो अधिगमकर्ता के पसंद, नापसंद को व्यक्त करता है। |
| अभिव्यक्ति | एक स्वाभाविक योग्यता या एक कौशल |
| गुणसूत्र | कोशिकाओं जो आनुवांशिक युग्मन को अभिमानल बच्चे को देते हैं। |
| परिपक्वता | वृद्ध या परिपक्वता या परिपक्व होने की एक प्रक्रिया। |
| वृद्धि | किसी गतिविधि या मानवीय योग्यता को दोनों को एक योग्यता या क्षमता है। |
| अतिक्रमण | एक नकसागरिक प्रभाव होना। |
| अंत:सम्बन्ध | एक परस्परिक संबंध होना। |
अनुवांशिकता एवं वातावरण

अपवाद/असाधारण : दुर्लभ योग्यताओं और कौशल से युक्त बच्चे।
युग्मनत : अंडो और शुक्राणुओं का समृद्धि।
समरूप जुड़वा : सभी गुणों में समान या दो बच्चों के बीच निकट सादृश्य।
प्रात-शुम जुड़वा : एक जैसे दिखने वाले दो भाई।

2.12 अन्य इकाई अभ्यास

1. आनुवांशिकता एवं वातावरण की सापेक्षिक सार्थकता पर चर्चा कीजिए।
2. आनुवांशिकता एवं वातावरण के शैक्षिक निर्देशांक की चर्चा कीजिए।